vishikhamedia@gmail.com

विभिन्न विषयों पर आधारित राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

RNI No. RAJHIN/2019/77486

मूल्यः 25 रुपये

विशिखा

तीर निशाने पर

वर्ष:06 अंक:11 नवम्बर 2024 पृष्ठ:32

राजस्थान संस्करण

_vishikhamedia/ vishikhamedia/

vishikhamedia vishikhamedia.in

टाटा... रतन

रतन टाटा : सादगी से जीत लेते थे सभी का दिल

वह उन शख्सियतों में शुमार थे, जिनका हर कोई सम्मान करता था। कई मौकों पर उन्होंने गरीब और जरूरतमंद लोगों की मदद कर भारतीयों को गर्व महसूस कराया। रतन टाटा की शख्सियत को देखें, तो वह सिर्फएक बिजनेसमैन नहीं, बल्कि सादगी से भरे नेक और दरियादिल इन्सान, लोगों के लिए आदर्श और प्रेरणास्रोत भी थे।

विशिखा

न्यूज़ 24x7

आपकी बात, आपके साथ

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

तीर निशाने पर

विशिखा

अब डिजिटल एडिशन में भी उपलब्ध

www.vishikhamedia.in

अंदर

दिल्ली में फिर हुआ निर्भया कांडः हैवानियत करने वाले तीन दरिंदे पकड़े गये

देश की राजधानी एक बार फिर से शर्मसार हुई है। दिल्ली में एक और निर्भया जैसी घटना सामने आई है। दिल्ली पुलिस के पुराने मुख्यालय के पास आईटीओ पर एक युवती के साथ अत्याचार की सभी हदें पार कर दी गईं। तीन दरिंदों ने मिलकर उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया, फिर ऑटो चालक ने भी उसी ऑटो में उसके साथ दुष्कर्म किया। 05

09 | रतन टाटा : पारसियों ने बदल दी देश की तकदीर और तस्वीर

12 | नोएल का उदयः टाटा-मिस्त्री परिवारों में सुलह की संभावना

14 | हिंदुओं के त्योहार पर ही क्यों फैलती हैं अराजकता और हिंसा

16 | आतंकियों को पनाह देकर कनाडा बन रहा है दूसरा पाकिस्तान

18 | मेहंदीपुर का बालाजी मंदिर, जहां प्रेत बाधा से ग्रस्त लोग लगाते हैं हाजिरी

21 | अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के साथ गर्भपात के अधिकार पर होगा जनमत संग्रह

22 | कांग्रेस के साथ ही आगे बढ़ेगा अखिलेश का समाजवाद

25 | सीएसआरः अब जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र के लिए कर सकते हैं ऑनलाइन आवेदन

28 | महाराष्ट्र में लाडली बहना योजना बंद

विशिखा
तीर निशाने पर
अंक: 11 वर्ष:06, नवम्बर 2024

मुख्य कार्यकारी अधिकारी
प्रियल श्रीवास्तव
सम्पादक
अनिल कुमार श्रीवास्तव
डिजाइन
देवेन्द्र नेगी, उत्तराखण्ड

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक **अनिल कुमार श्रीवास्तव** द्वारा **भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी.बी. कॉर्प लिमिटेड** शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर से छपवाकर एवं **विशिखा मीडिया** 191/56 (जानकी देवी स्कूल के पास) सेक्टर-19, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर- 302033 राजस्थान के लिए प्रकाशित

पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका मे प्रकाशित सामग्री के विषय मे अपनी प्रतिक्रियाएं एवं सुझाव अवश्य भेजें। अपनी प्रतिक्रियाएं एवं सुझावों को आप हमें vishikhamedia@gmail.com पर ई-मेल भी कर सकते हैं।
लेखकों से निवेदन है कि कृपया अपनी स्व-लिखित एवं मौलिक रचनायें ही भेजें। रचनाओं के साथ अपना पूरा नाम, पता, मोबाइल नंबर, ई-मेल एवं फोटो अवश्य भेजें। रचनाओं के छापने या न छापने का अधिकार संपादकीय मंडल का होगा। अस्वीकृत रचनायें लौटाई नहीं जाएंगी।
पत्रिका मे प्रकाशित सभी लेख एवं रचनाओं में संपादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है। पत्रिका मे प्रकाशित आलेख एवं रचनायें लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशित सामग्री के उपयोग करने से पूर्व में संपादक की लिखित सहमति आवश्यक है।
'किसी भी तरह के विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर (राजस्थान) होगा।
'पत्रिका मे प्रकाशित कुछ चित्र, लेख एवं आंकड़ो को इन्टरनेट एवं अन्य वेवसाइट से लिया गया है।

विशिखा न्यूज़ 24x7
आपकी बात, आपके साथ

सम्पादक की कलम से

अनिल कुमार श्रीवास्तव

अपनी सादगी से हर किसी का दिल जीत लेने वाले भारत के रतन.... टाटा कर गए...

भारत के रतन कहे जाने वाले दिग्गज उद्योगपति और टाटा संस के आजीवन चेयरमैन रतन टाटा ने 86 साल की उम्र में मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में अंतिम सांस ली। रतन टाटा अपनी सादगी से हर किसी का दिल जीत लेते थे। वह उन शख्सियतों में शुमार थे, जिनका हर कोई सम्मान करता था। रतन टाटा की शख्सियत को देखें, तो वह सिर्फ एक बिजनेसमैन ही नहीं, बल्कि सादगी से भरे नेक और दरियादिल इन्सान तथा लोगों के लिए आदर्श और प्रेरणास्रोत भी थे। उन्होंने हमेशा गरीब और जरूरतमंदों की मदद कर भारतीयों को गर्व महसूस कराया। अपने छोटे से छोटे कर्मचारी को भी रतन टाटा अपने परिवार की तरह मानते थे। रतन टाटा को कुत्ते बहुत प्रिय थे। रतन टाटा ने वर्ष 2018 में अपने बीमार कुत्ते की देखभाल के लिए प्रिंस चार्ल्स तक का न्योता तक ठुकरा दिया था।

देश के रतन को भावभीनी श्रद्धांजलि...

दिल्ली में फिर हुआ निर्भया कांडः

हैवानियत करने वाले तीन दरिंदे पकड़े गये

देश की राजधानी एक बार फिर से शर्मसार हुई है। दिल्ली में एक और निर्भया जैसी घटना सामने आई है। दिल्ली पुलिस के पुराने मुख्यालय के पास आईटीओ पर एक युवती के साथ अत्याचार की सभी हदें पार कर दी गईं। तीन दरिंदों ने मिलकर उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया, फिर ऑटो चालक ने भी उसी ऑटो में उसके साथ दुष्कर्म किया। बार–बार की गई इस बर्बरता के कारण युवती का मानसिक संतुलन बिगड़ गया। ओडिशा की रहने वाली 34 वर्षीय युवती अर्धनग्न अवस्था में राजघाट से पैदल चलते हुए सराय काले खां तक पहुंच गई। इस दौरान, युवती के निजी अंगों से खून बह रहा था, लेकिन रिंग रोड पर गुजरे हजारों वाहनों में से किसी ने भी उसकी मदद नहीं की।

दिल्ली पुलिस ने मामले का खुलासा कर तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। तीनों ने ही युवती के साथ अत्याचार किया था। पुलिस ने 700 सीसीटीवी कैमरों और 150 से अधिक ऑटो चालकों से पूछताछ की तब जाकर आरोपियों को पकड़ा जा सका। पुलिस के अनुसार, पीड़िता का अब भी इलाज चल रहा है। आरोपियों की पहचान प्रमोद बाबू, प्रभु महतो, और मोहम्मद शम्सुल के रूप में हुई है। इस दर्दनाक घटना के सामने आने के बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू की और 10 टीमें लगाई। पुलिस ने 700 सीसीटीवी कैमरों की जाँच की और कई ऑटो चालकों से पूछताछ की, जिसके बाद आरोपी पकड़े गए।

आपको बता दें कि 10 अक्टूबर की देर रात करीब तीन बजे सराय काले खां इलाके में एक युवती गंभीर हालत में मिली थी। एक नौसेना के अधिकारी ने उसे देखा और पुलिस को सूचना दी। उन्होंने बताया कि युवती के शरीर से खून बह रहा था, और अगर उस अधिकारी ने पुलिस को जानकारी नहीं दी होती तो युवती की जान भी जा सकती थी। एम्स में युवती का ऑपरेशन हुआ और अभी वह एम्स के मानसिक चिकित्सा विभाग में भर्ती है। दक्षिण–पूर्व जिला पुलिस ने तीनों आरोपियों ऑटो चालक प्रभु, कबाड़ी की दुकान पर काम करने वाला प्रमोद और शमशुल लंगड़ा को गिरफ्तार कर लिया है। दक्षिण–पूर्व जिला पुलिस उपायुक्त रवि कुमार सिंह ने आरोपियों की गिरफ्तारी की पुष्टि की है। महिला सिपाही संगीता ने सोशल वर्कर बनकर पीड़िता से मुलाकात की, तब पीड़िता ने अपने साथ हुए अत्याचार के बारे में बताया। एसीपी ऐश्वर्या सिंह ने पीड़िता को न्याय दिलाने को अपना उद्देश्य बना लिया। पुलिस ने घटनास्थल से खून से सनी हुई युवती की सलवार और आरोपी प्रभु का ऑटो भी बरामद कर लिया है।

सोशल वर्क में एमए की डिग्रीधारी युवती एक साथी के कहने पर दिल्ली आई थी, जो उसे अच्छा काम दिलाने की बात कह रहा था।

साथी के खर्च उठाने के कारण युवती पर भार बढ़ने लगा, जिससे उसे किशनगढ़ थाने के क्षेत्र में ननों के साथ रखा गया। वहां उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया और वह सड़क पर आ गई। ननों में से एक ने किशनगढ़ थाने में इसकी सूचना दी। ओडिशा में परिजनों को खबर दी गई और वे उसे ले जाने दिल्ली आए, लेकिन वह उनके साथ नहीं गई।

टाटा...रतन

रतन टाटा : सादगी से जीत लेते थे सभी का दिल

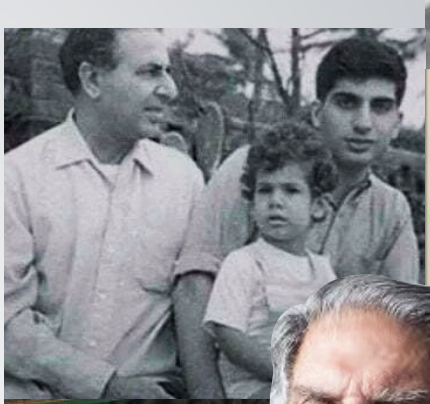

वह उन शख्सियतों में शुमार थे, जिनका हर कोई सम्मान करता था। कई मौकों पर उन्होंने गरीब और जरूरतमंद लोगों की मदद कर भारतीयों को गर्व महसूस कराया। रतन टाटा की शख्सियत को देखें, तो वह सिर्फएक बिजनेसमैन नहीं, बल्कि सादगी से भरे नेक और दरियादिल इन्सान, लोगों के लिए आदर्श और प्रेरणास्रोत भी थे।

देश के जाने–माने उद्योगपति और टाटा संस के आजीवन चेयरमैन एमिरेट्स, रतन टाटा नहीं रहे। 86 साल की उम्र में भी सक्रिय शीर्ष उद्योगपति ने बुधवार रात करीब 11:30 बजे मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में अंतिम सांस ली। टाटा समूह 2023–24 में 13 लाख 85 हजार करोड़ रुपये के राजस्व के साथ दुनिया के सबसे बड़े उद्योग समूहों में से एक है। भारत के रतन कहे जाने वाले दिग्गज उद्योगपति रतन टाटा अरबपतियों में शामिल होने के बावजूद अपनी सादगी से हर किसी का दिल जीत लेते थे। वह उन शख्सियतों में शुमार थे, जिनका हर कोई सम्मान करता था। कई मौकों पर उन्होंने गरीब और जरूरतमंद लोगों की मदद कर भारतीयों को गर्व महसूस कराया। रतन टाटा की शख्सियत को देखें, तो वह सिर्फ एक बिजनेसमैन नहीं, बल्कि सादगी से भरे नेक और दरियादिल इन्सान, लोगों के लिए आदर्श और प्रेरणास्रोत भी थे। अपने समूह से जुड़े छोटे से छोटे कर्मचारी को भी अपने परिवार की तरह मानते थे और उनका ख्याल रखने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ते थे। उनके व्यक्तित्व का एक और पहलू उम्र के सात दशक पूरे करने के बावजूद सक्रिय रहना रहा। 2011 की बंगलूरू एयर शो की उनकी तस्वीरें आज भी चाहने वालों के दिलो–दिमाग में जीवंत है, जब 73 साल की आयु में रतन टाटा ने एप–17 लड़ाकू विमान के कॉकपिट में उड़ान भरी थी।

रतन टाटा थे कारों के शौकीन

जेआरडी टाटा की तरह रतन टाटा को भी विमान उड़ाने का बहुत शौक था। वह 2007 में एफ–16 फाल्कन उड़ाने वाले पहले भारतीय बने। उन्हें कारों का भी बहुत शौक था। उनके संग्रह में मासेराती क्वाट्रोपोर्टे, मर्सिडीज बेंज एस–क्लास, मर्सिडीज बेंज 500 एसएल और जगुआर एफ–टाइप जैसी कारें शामिल हैं।

1991 में बने थे टाटा समूह के चेयरमैन

रतन टाटा को 53 साल की उम्र में 1991 में ऑटो से लेकर स्टील तक के कारोबार से जुड़े टाटा समूह का चेयरमैन बनाया गया था। उन्होंने 2012 तक इस समूह का नेतृत्व किया, जिसकी स्थापना उनके परदादा ने एक सदी पहले की थी। 1996 में टाटा ने टेलीकॉम कंपनी टाटा टेलीसर्विसेज की स्थापना की और 2004 में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) को मार्केट में लिस्ट कराया था। चेयरमैन पद से हटने के बाद, टाटा को टाटा संस, टाटा इंडस्ट्रीज, टाटा मोटर्स, टाटा स्टील और टाटा केमिकल्स के मानद चेयरमैन की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

भारतीय उद्योगजगत के शिखर पुरुष रतन टाटा के शानदार सफर का आगाज बेहद साधारण दायित्व से हुआ था। टाटा समूह का उत्तराधिकारी होने के बावजूद रतन ने अपने कॅरिअर की शुरुआत टाटा स्टील के संयंत्र में भट्ठी में चूना डालने वाले कामगार के तौर पर की। वह भी तब जब वह बहुराष्ट्रीय आईटी दिग्गज आईबीएम की मोटे पैकेज वाली नौकरी ठुकराकर समूह से जुड़े थे। बचपन में माता–पिता के अलग हो जाने से रतन का पालन–पोषण 10 वर्ष की आयु तक उनकी दादी लेडी नवाजबाई ने किया। आईबीएम से नौकरी की पेशकश के बावजूद टाटा ने भारत लौटने का फैसला किया।

रतन टाटा कुत्तों से करते थे प्यार

रतन टाटा को कुत्ते बहुत प्रिय थे। कुछ साल पहले एक बरसात की शाम टाटा ने आदेश दिया था कि मुंबई में समूह के मुख्यालय के बाहर किसी भी आवारा कुत्ते को आश्रय दिया जाए। यही नहीं टाटा ने 2018 में अपने बीमार कुत्ते की देखभाल के लिए प्रिंस चार्ल्स का न्योता तक ठुकरा दिया था। चार्ल्स उन्हें लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड देना चाहते थे। चार्ल्स को जब रतन के न आने के कारणों का पता चला तो उन्होंने उनकी खूब सराहना की।

90 के दशक में जब टाटा समूह ने अपनी कार को लॉन्च किया तब बिक्री उम्मीदों के अनुरूप नहीं हो पाई। टाटा समूह ने टाटा मोटर्स के यात्री कार विभाग को बेचने का मन बना लिया। इसके लिए रतन टाटा ने अमेरिकन कार निर्माता कंपनी फोर्ड मोटर्स के अध्यक्ष बिल फोर्ड से बात की। बातचीत के दौरान बिल फोर्ड ने उनका मजाक उड़ाते हुए कहा था कि तुम कुछ नहीं जानते, आखिर तुमने पैंसेजर कार डिविजन शुरू ही क्यों किया? अगर मैं यह सौदा करता हूं तो यह तुम पर बड़ा अहसान करूंगा। फोर्ड चेयरमैन के इन शब्दों से रतन टाटा बहुत आहत हुए और उन्होंने पैंसेजर कार विभाग बेचने का अपना फैसला टाल दिया। बाद के वर्षों में टाटा मोटर्स को रतन ने बुलंदियों पर पहुंचा दिया। दूसरी ओर, फोर्ड कंपनी की हालत बिगड़ती जा रही थी। डूबती फोर्ड कंपनी के प्रमुख लग्जरी ब्रिटिश ब्रांड जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर) को वर्ष 2008 में 2.3 अरब डॉलर में खरीदकर अपमान का बदला ले लिया। इतना ही नहीं फोर्ड के चेयरमैन बिल को इस सौदे के लिए भारत आकर टाटा से बातचीत करनी पड़ी। तब अपमानभरी बातें करने वाले बिल फोर्ड ने ही रतन टाटा को धन्यवाद करते हुए कहा, आप जैगुआर और लैंड रोवर सीरीज को खरीदकर हम पर बड़ा अहसान कर रहे हैं।

2008 में मिला भारत का दूसरे सर्वोच्च नागरिक अलंकरण- पद्म विभूषण

86 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कहने वाले रतन टाटा को ढेरों पुरस्कार और खिताब से सम्मानित किया गया था। भारत के 50वें गणतंत्र दिवस समारोह पर उन्हें पद्म भूषण तो 26 जनवरी 2008 में उन्हें भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक अलंकरण पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

- 2008 में वह नैसकॉम ग्लोबल लीडरशिप पुरस्कार प्राप्त करने वालों में से एक थे। ये पुरस्कार उन्हें 14 फरवरी 2008 को मुंबई में एक समारोह में दिया गया था। 2007 में उन्हें टाटा परिवार की ओर से परोपकार का कारनैगी पदक से सम्मानित किया गया था।
- रतन टाटा भारत में विभिन्न संगठनों में वरिष्ठ पदों पर कार्यरत रहे। वह प्रधानमंत्री की व्यापार एवं उद्योग परिषद के सदस्य भी थे। मार्च 2006 में टाटा को कॉर्नेल विश्वविद्यालय की ओर से 26 वें रॉबर्ट एस सम्मान से सम्मानित किया गया था।

शिक्षण व व्यापारिक संस्थाओं के थे सदस्य

रतन टाटा के विदेशी संबंधों में मित्सुबिशी कारपोरेशन, अमेरिकन इंटरनेशनल समूह, जेपी मॉर्गन चेज और बूज एलन हैमिल्टन के अंतरराष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड की सदस्यता शामिल थे। वह रैंड कारपोरेशन और अपनी मातृसंस्था कॉर्नेल विश्वविद्यालय और दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के न्यासी मंडल के भी सदस्य थे। वह दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की अंतरराष्ट्रीय निवेश परिषद के बोर्ड के साथ ही न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज के एशिया–पैसिफिक सलाहकार समिति के भी सदस्य थे। वह एशिया पैसिफिक पॉलिसी के रैंड केंद्र के सलाहकार बोर्ड, पूर्व–पश्चिम केंद्र के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स में थे और बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के भारत एड्स इनिशीएटिव कार्यक्रम बोर्ड में सेवाएं दे चुके थे।

30 स्टार्टअप को दिया सहारा

टाटा समूह से हटने के बाद, रतन टाटा ने नए जमाने की तकनीक से प्रेरित स्टार्टअप कंपनियों में निवेश किया, जो देश के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। टाटा ने ओला इलेक्ट्रिक, पेटीएम, स्नैपडील, लेंसकार्ट और जिवामे सहित 30 से अधिक स्टार्टअप में निवेश किया।

जब भारत-चीन युद्ध के कारण नहीं हो पाई शादी

रतन टाटा ने एक बार जिक्र किया था कि वह जब लॉस एंजिलिस में पढ़ाई कर रहे थे, तब पहली बार प्यार हुआ था। वह उस लड़की से शादी करना चाहते थे। इसी दौरान दादी की तबीयत खराब होने की खबर पहुंची, जिसके बाद उन्हें भारत लौटना पड़ा। रतन टाटा ने बताया था कि उन्हें लगता था जिससे वह शादी करना चाहते हैं वह उनके साथ भारत आएगी, लेकिन 1962 में हुए भारत–चीन युद्ध की वजह से लड़की के माता–पिता इस शादी के लिए राजी नहीं हुए और रिश्ता टूट गया।

रतन टाटा

पारसियों ने बदल दी देश की तकदीर और तस्वीर

फोर्ब्स की टॉप–10 अमीरों में पालोंजी मिस्त्री, गोदरेज, सायरस पूनावाला आदि के नाम देखने को मिले. वहीं, यह जानकर लोगों को हैरानी होगी कि टाटा समूह के चेयरमैन रहे रतन टाटा देश के अमीर पारसियों में टॉप थ्री में भी शामिल नहीं थे. रतन टाटा का मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में बुधवार रात देहांत हो गया. देश के जाने माने उद्योगपति के जाने से पूरे भारत में शोक की लहर दौड़ गई है. देश के कई राज्यों की विकास की गाथा में टाटा समूह का बड़ा योगदान है. टाटा पारसी समुदाय से आते हैं. इस समुदाय का भारत में बिजनेस करने से लेकर देश के विकास में काफी योगदान रहा है. धर्म से जुड़े कई लोगों ने भारत की विकासगाथा को लिखने में भूमिका निभाई है. पारसी धर्म जिसे जरथुस्त्र धर्म भी कहा जाता है विश्व का प्राचीन धर्मों में से एक है. बताया जाता है कि इस धर्म की स्थापना पैगंबर जरथुस्त्र ने ईरान में करीब 3500 साल पहले की थी. जरथुस्त्र को ऋग्वेद के अंगिरा, बृहस्पति आदि ऋषियों का समकालिक माना जाता है परन्तु ऋग्वेदिक ऋषियों के विपरीत जरथुस्त्र ने एक संस्थागत धर्म की शुरुआत की था. देखा जाए तो जरथुस्त्र किसी संस्थागत धर्म के प्रथम पैगम्बर कहे जाते हैं. पारसी धर्म के लोग एक ईश्वर को मानने वाले हैं, और वे अहुरमज्दा भगवान में अपनी आस्था रखते हैं।

पारसी धर्म और हिंदू धर्म में समानता

हालांकि अहुरमज्दा उनके सर्वोच्च भगवान हैं पर दैनिक जीवन के अनुष्ठानों व कर्मकांडों में 'अग्निश उनके प्रमुख देवता के रूप में दिखाई देते हैं. यह बताना जरूरी है कि पारसियों का धर्मग्रंथ श्जेंद अवेस्ताश है और यह ऋग्वैदिक संस्कृत की ही एक प्राचीन शाखा अवेस्ता भाषा में लिखा गया है. इसलिए ऋग्वेद और अवेस्ता में बहुत से शब्दों की समानता है. प्रमाण के रूप में इस ग्रंथ का सिर्फ पाँचवा भाग ही उपलब्ध है.

ईरान से भागकर भारत आए पारसी

इस्लाम धर्म के आने के पूर्व प्राचीन ईरान में जरथुष्ट्र धर्म का ही प्रचलन था. सातवीं शताब्दी में अरबों ने ईरान को पराजित किया और तब वहां के जरथुष्ट्र धर्म मानने वालों ने इस्लाम कुबूल कर लिया था और जिन लोगों ने धर्म बदलना नहीं स्वीकारा वे दुनिया के अलग अलग स्थानों पर चले गए. इन्हीं में से कुछ लोग एक नाव पर सवार होकर भारत भाग आये और यहां गुजरात के नवसारी में आकर बस गए. वर्तमान समय में भारत में उनकी संख्या लगभग एक लाख है, जिसका 70ः मुम्बई में रहता है.

गुजरात के दीव पहुंचे पारसी

ईरान से कुछ लोग 766 ईसवीं में दीव (दमण और दीव) पहुंचे थे. दीव से वे गुजरात में बसे और कुछ लोग गुजरात से मुंबई में जाकर बस गए. ईरान में कुछ हजार पारसियों को छोड़कर लगभग सभी पारसी अब भारत में ही रहते हैं और उनमें से भी अधिकांश अब मुंबई में हैं.

भारत में कैसे व्यापारी बन गए पारसी

पारसी समुदाय ने कितना कष्ट और संघर्ष देखा यह तो साफ हो गया है. लेकिन इसके बावजूद यह समुदाय हारा नहीं. इस समुदाय ने अपनी मेहनत और जुझारू रवैये के चलते एक बार फिर ईंट ईंट जोड़कर न केवल अपने समुदाय का मान–सम्मान देश दुनिया में बनाया बल्कि देश के विकास में अमिट योगदान भी दिया. देश के कुछ बड़े बिजनेसमैन में इस समुदाय के लोगों का नाम आता है.

देश के बड़े पारसी घरानों के नाम

टाटा, गोदरेज, पूनावाला घराने इसी समुदाय से आते हैं. राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इनके नाम लिए जाते हैं. फोर्ब्स की टॉप–10 अमीरों में पालोंजी मिस्त्री, गोदरेज, सायरस पूनावाला आदि के नाम देखने को मिले. वहीं, यह जानकर लोगों को हैरानी होगी कि टाटा समूह के चेयरमैन रहे रतन टाटा देश के अमीर पारसियों में टॉप थ्री में भी शामिल नहीं थे. टॉप थ्री की सूची में कौन–कौन से नाम शामिल हैं, आइए जानते हैं।

पालोंजी मिस्त्री

उद्योगति पालोनजी मिस्त्री देश के दिग्गज इंजीनियरिंग और कंस्ट्रक्शन ग्रुप के प्रमुख रहे हैं। इनका भी निधन 2022 में हो चुका है। उनकी संपत्ति 2022 में 19 अरब डॉलर के करीब बताई जाती है। इस पारसी समूह का परिवार देश के रईस परिवारों में से एक है। इस वक्त उनका बड़ा बेटा शापोर समूह को चला रहा है। वहीं, उनके छोटे बेटे सायरस मिस्त्री को टाटा ग्रुप के चेयरमैन पद बनाया गया था. जिन्हें बाद में एक विवाद के बाद कंपनी से हटा दिया गया और इसके बाद एक सड़क दुर्घटना में उनकी मौत हो गई थी।

गोदरेज

आदि गोदरेज ख्यातिप्राप्त बिजनेस घराने गोदरेज के अध्यक्ष हैं। गोदरेज भारत के सबसे धनी उद्योगपतियों में से एक हैं। बता दें कि आदि गोदरेज कई सारे भारतीय उद्योग संगठनों के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इनकी संपत्ति इस समय करीब 2.5 अरब डॉलर आंकी गई है।

सायरस पूनावाला

इस के बाद एक और पारसी घराना जिसको को उद्योगपतियों की सम्मानित सूची में जगह मिलती है। डॉ. सायरस पूनावाला की संपत्ति करीब 12.5 अरब डॉलर बताई जाती है। जब दुनिया में कोरोनावायरस आया तो भारत भी में था। तब पूनावाला परिवार ने उम्मीद के साथ कोरोना वैक्सीन बनाने का काम शुरू किया था। उनके ग्रुप के सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया ने वैक्सीन बनाई और देश की इकोनॉमी को सहारा दिया।

नुसली वाड़िया

नुसली वाड़िया दुनिया के अमीर व्यक्तियों में से एक हैं। उनकी संपत्ति करीब 7.30 अरब डॉलर बताई जाती है। वाडिया समूह के नुसली वाडिया चेयरमैन हैं।

रतन टाटा

रतन टाटा देश में वो नाम है जिसके नाम से हर बच्चा वाकिफ है। पारसी समुदाय के कारोबारियों में उनकी संपत्ति सबसे कम बताई जाती है। उनकी संपत्ति करीब 1 अरब डॉलर के करीब रही है। यह सभी को ज्ञात है कि टाटा की संपत्ति का बड़ा हिस्सा परोपकार के कामों में लगाया जाता रहा है। रतन टाटा ने टाटा ग्रुप की लंबे समय तक लीडरशिप की है। गौरतलब है कि टाटा ग्रुप को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का श्रेय उन्हीं को दिया जाता है। रतन टाटा को भारत के दो नागरिक पुरस्कार, पद्म विभूषण (2008), दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान, और पद्म भूषण (2000), तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्राप्तकर्ता हैं.

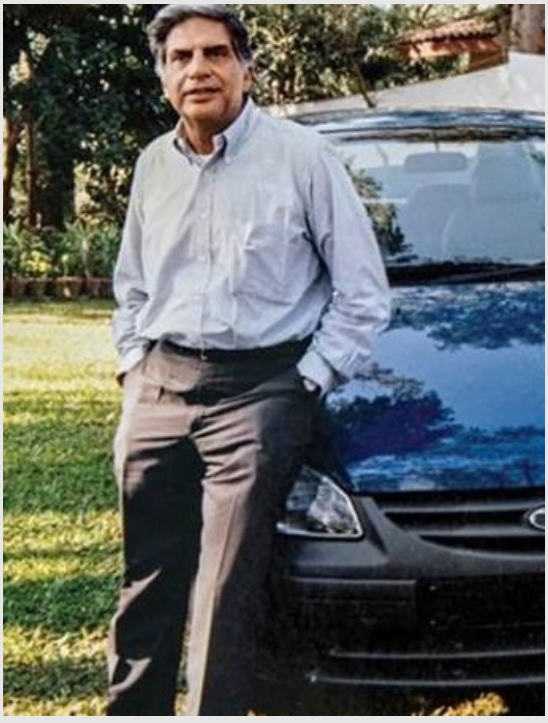

सुप्रीम कोर्ट ने जेट एयरवेज की संपत्तियों को बेचने का आदेश दिया

लंबे समय से वित्तीय संकट से घिरी हुई एयरलाइन जेट एयरवेज को पहले ही बंद कर दिया गया था। अब सुप्रीम कोर्ट ने इसकी संपत्तियों को बेचने का आदेश दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने इस एयरलाइन को लिक्विडेट करने का आदेश देते हुए एनसीएलएटी के फैसले को रद्द कर दिया, जिसमें जेट एयरवेज का मालिकाना हक जेकेसी को देने का निर्णय लिया गया था।

एनसीएलएटी ने जेट एयरवेज का मालिकाना हक मंजूर किए गए समाधान योजना के तहत जालान–कालरॉक कंसोर्टियम (जेकेसी) को सौंपने का निर्णय लिया था। हालांकि, इस फैसले के खिलाफ एसबीआई और अन्य कर्जदाताओं ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर दी थी। लंबे समय से वित्तीय संकट से घिरी हुई एयरलाइन जेट एयरवेज को पहले ही बंद कर दिया गया था। अब सुप्रीम कोर्ट ने इसकी संपत्तियों को बेचने का आदेश दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने इस एयरलाइन को लिक्विडेट करने का आदेश देते हुए एनसीएलएटी के फैसले को रद्द कर दिया, जिसमें जेट एयरवेज का मालिकाना हक जेकेसी को देने का निर्णय लिया गया था।

सुप्रीम कोर्ट ने कंसोर्टियम की प्रस्तावित समाधान योजना को खारिज करते हुए कहा कि वे निर्धारित समय में पहली किश्त भी जमा नहीं कर पाए। कोर्ट ने इस मामले में 16 अक्टूबर को अपना फैसला सुरक्षित रखा था और आज इसे चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता में तीन जजों की पीठ ने सुनाया। जालान–कालरॉक कंसोर्टियम द्वारा जमा की गई 150 करोड़ रुपये की बैंक गारंटी भी जब्त कर ली गई है। वित्तीय संकट के कारण जेट एयरवेज को 2019 में बंद कर दिया गया था, और इसके सबसे बड़े लेनदार एसबीआई ने एनसीएलएटी मुंबई में दिवाला कार्यवाही शुरू की थी। 2021 में जालान–कालरॉक कंसोर्टियम ने इसके लिए बोली लगाई थी, लेकिन मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गया।

सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर 12 मार्च को एनसीएलएटी ने जेट एयरवेज का स्वामित्व जेकेसी को ट्रांसफर करने के आदेश की पुष्टि की थी, और इससे पहले जनवरी में भी एनसीएलएटी ने इसे मंजूरी दी थी। एसबीआई की अगुवाई वाली कर्जदाताओं की समिति ने यह तर्क दिया कि जेकेसी की योजना कर्जदाताओं के हित में नहीं है। उन्होंने एनसीएलएटी के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी, जिसमें समाधान योजना को सही ठहराया गया था।

जेकेसी ने जेट एयरवेज के स्वामित्व के लिए 350 करोड़ रुपये के पूंजी निवेश का वादा किया था, और एनसीएलएटी की तीन सदस्यीय पीठ ने इसमें 150 करोड़ रुपये की बैंक गारंटी को समायोजित करने की मंजूरी दी थी। लेनदारों का आरोप था कि वे हर महीने 22 करोड़ रुपये के हवाई अड्डे के शुल्क और अन्य खर्चों का भुगतान कर रहे हैं, जिससे अब तक 350 करोड़ रुपये से अधिक खर्च हो चुके हैं। सुप्रीम कोर्ट में सीनियर एडवोकेट हरीश साल्वे ने कर्जदाताओं की ओर से तर्क दिया कि एक एयरलाइन को कम से कम 20 विमानों की आवश्यकता होती है, जबकि कंसोर्टियम ने केवल पांच विमान हासिल किए हैं।

दूसरी ओर, कंसोर्टियम के सीनियर एडवोकेट मुकुल रोहतगी ने सभी आरोपों का खंडन किया। उन्होंने कहा कि कंसोर्टियम ने कर्जदाताओं की पेशकश का लाभ नहीं उठाया क्योंकि उन्हें 350 करोड़ रुपये का भुगतान करना था। कंसोर्टियम के दावे पर कर्जदाताओं की समिति ने सुप्रीम कोर्ट से जेट एयरवेज को लिक्विडेट करने की मांग की, जिसके बाद सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला आया।

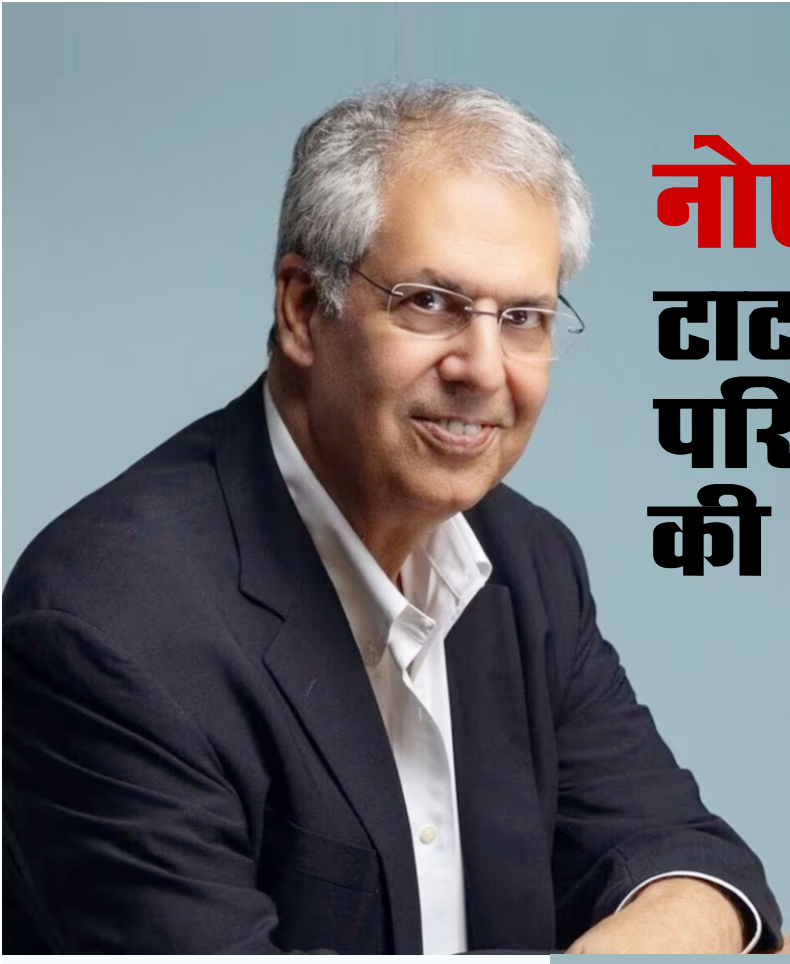

नोएल का उदय: टाटा-मिस्त्री परिवारों में सुलह की संभावना

मेहरजी पल्लोनजी ग्रुप के निदेशक, मेहली मिस्त्री को नवंबर 2022 में सर रतन टाटा ट्रस्ट, इसके सहयोगी टाटा एजुकेशन एंड डेवलपमेंट ट्रस्ट और सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट के गैर–कार्यकारी ट्रस्टी के रूप में नियुक्त किया गया था। वे दिन थे जब रतन टाटा का टाटा ट्रस्ट्स में दबदबा था।

रतन टाटा के सौतेले भाई नोएल टाटा को पिछले शुक्रवार को शक्तिशाली टाटा ट्रस्ट्स का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है, जिसके बाद मेहली मिस्त्री के टाटा ट्रस्ट्स के अध्यक्ष बनने की संभावना लगभग समाप्त हो गई है। मिस्त्री को टाटा समूह के स्वर्गीय अध्यक्ष एमेरिटस, रतन टाटा का करीबी विश्वासपात्र माना जाता था। रतन टाटा के निधन के बाद, भारत की कोरपोरेट दुनिया और सत्ता के गलियारों में यह अफवाह जोरों पर थी कि मेहली मिस्त्री टाटा ट्रस्ट्स के प्रमुख बनने जा रहे हैं। मेहली मिस्त्री, टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष, स्वर्गीय साइरस मिस्त्री की मौसी के पुत्र हैं। यानी दोनों चचेरे भाई हैं। मेहरजी पल्लोनजी ग्रुप के निदेशक, मेहली मिस्त्री को नवंबर 2022 में सर रतन टाटा ट्रस्ट, इसके सहयोगी टाटा एजुकेशन एंड डेवलपमेंट ट्रस्ट और सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट के गैर–कार्यकारी ट्रस्टी के रूप में नियुक्त किया गया था। वे दिन थे जब रतन टाटा का टाटा ट्रस्ट्स में दबदबा था।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि 2016 में साइरस मिस्त्री को टाटा संस के अध्यक्ष पद से हटाने के समय मेहली मिस्त्री रतन टाटा का पूरी तरह से साथ दे रहे थे। रतन टाटा और साइरस मिस्त्री के बीच हुए कटु विवाद ने मीडिया का खूब ध्यान खींचा था।

दूसरी ओर, मेहली मिस्त्री व्यावसायिक सौदों में कुछ गंभीर आरोपों का सामना कर रहे थे। एक प्रमुख विवाद मेहली मिस्त्री के टाटा पावर के साथ व्यावसायिक सौदों से जुड़ा है, जिसमें आरोप लगाए गए थे कि उनकी कंपनी को टाटा पावर द्वारा उचित निविदा प्रक्रिया के बिना आकर्षक दीर्घकालिक अनुबंध दिए गए थे।

रतन टाटा और साइरस मिस्त्री के बीच हुए इस विवाद के दौरान मेहली मिस्त्री का नाम बार–बार सामने आते रहा था। कुछ जानकारों का कहना था कि मेहली मिस्त्री ने कथित रूप से साइरस मिस्त्री को टाटा हाउस से हटाने के लिए पर्दे के पीछे काम किया था। टाटा समूह के जानकारों का कहना है कि हाल के वर्षों में ट्रस्ट्स में मेहली मिस्त्री की भूमिका काफी बढ़ गई थी। इसलिए, टाटा ट्रस्ट्स का प्रमुख बनने के लिए उनका नाम चर्चा में था।

टाटा ट्रस्ट्स का नेतृत्व करने के लिए सबसे आगे होने के बावजूद, मेहली मिस्त्री टाटा ट्रस्ट्स का प्रमुख नहीं बन पाए। कहा जाता है कि नोएल टाटा को सर्वसम्मति से शीर्ष पद पर नियुक्त किया गया है। नोएल टाटा की एक सफल और गैर–विवादास्पद व्यवसायी के रूप में प्रतिष्ठा ने टाटा ट्रस्ट्स के प्रमुख के रूप में उनके चयन में निर्णायक भूमिका निभाई। उन्होंने टाटा इंटरनेशनल में

अपना करियर शुरू किया था। वे जून 1999 में, टाटाव समूह समूह की खुदरा शाखा ट्रेंट के प्रबंध निदेशक बने, जिसकी स्थापना उनकी माँ सिमोन टाटा ने की थी। इस समय तक, ट्रेंट ने डिपार्टमेंटल स्टोर लिटिलवुड्स इंटरनेशनल का अधिग्रहण कर लिया था और इसका नाम बदलकर वेस्टसाइड कर दिया था। उन्होंने वेस्टसाइड को विकसित किया, इसे एक लाभदायक उपक्रम बनाया। 2003 में, उन्हें टाइटन इंडस्ट्रीज और वोल्तास का निदेशक नियुक्त किया गया।

दूसरी ओर, मेहली मिस्त्री व्यावसायिक सौदों में कुछ गंभीर आरोपों का सामना कर रहे थे। एक प्रमुख विवाद मेहली मिस्त्री के टाटा पावर के साथ व्यावसायिक सौदों से जुड़ा है, जिसमें आरोप लगाए गए थे कि उनकी कंपनी को टाटा पावर द्वारा उचित निविदा प्रक्रिया के बिना आकर्षक दीर्घकालिक अनुबंध दिए गए थे। हालांकि, मेहली मिस्त्री ने इन आरोपों का हमेशा खंडन किया है।यहां तक कि टाटा संस ने भी इस आरोप का खंडन किया है कि मेहली मिस्त्री और उनके सहयोगियों को प्रतिस्पर्धी बोली के बिना टाटा पावर द्वारा दिए गए अनुबंधों से लाभ हुआ।मेहली मिस्त्री मेहरजी पल्लोनजी ग्रुप के निदेशक रहे हैं।

इस बीच, मेहली मिस्त्री कहते रहे हैं कि उन पर लगाया गया आरोप कि वह साइरस मिस्त्री को टाटा संस के प्रमुख पद से हटाने के पीछे थे, असत्य है। मेहली मिस्त्री ने साइरस मिस्त्री को कमजोर लीडर तक कहा था। यह टिप्पणी मेहली और साइरस के बीच अदावत को दर्शाती है।

बता दें कि साइरस मिस्त्री का परिवार, अपनी होल्डिंग कंपनी शापूरजी पल्लोनजी के माध्यम से, टाटा संस में 18.37: हिस्सेदारी रखता है, जो उन्हें टाटा ट्रस्ट्स के बाद दूसरा सबसे बड़ा शेयरधारक बनाता है। खैर, मेहली मिस्त्री और साइरस मिस्त्री के बीच का झगड़ा सिर्फ एक निजी विवाद नहीं था, बल्कि एक सार्वजनिक और कानूनी लड़ाई थी जो टाटा समूह के भीतर सामने आई थी, जिसके परिणामस्वरूप वर्षों तक मुकदमेबाजी हुई। मेहली

अब जब नोएल टाटा टाटा ट्रस्ट्स का नेतृत्व कर रहे हैं, तो टाटा–मिस्त्री परिवार के भीतर सुलह के एक नए अध्याय की शुरुआत होने की उम्मीद है। इस बीच, यह भी उम्मीद जताई जा रही है कि नोएल टाटा के सक्षम नेतृत्व के चलते टाटा और मिस्त्री परिवार के बीच संबंध सुधरने लगेंगे।

खुलकर रतन टाटा का साथ देते रहे थे। क्या उस विवाद में मेहली मिस्त्री की कथित भूमिका के चलते उन्हें टाटा ट्रस्ट्स को नेतृत्व करने का मौका नहीं मिला? यह सवाल अभी बना हुआ है। उस विवाद के कारण मेहली मिस्त्री और साइरस मिस्त्री के परिवारों में दूरियां भी बढ़ी थीं।

अब जब नोएल टाटा टाटा ट्रस्ट्स का नेतृत्व कर रहे हैं, तो टाटा–मिस्त्री परिवार के भीतर सुलह के एक नए अध्याय की शुरुआत होने की उम्मीद है। इस बीच, यह भी उम्मीद जताई जा रही है कि नोएल टाटा के सक्षम नेतृत्व के चलते टाटा और मिस्त्री परिवार के बीच संबंध सुधरने लगेंगे। नोएल टाटा की शादी स्वर्गीय पल्लोनजी मिस्त्री की बेटी और स्वर्गीय साइरस मिस्त्री की बहन अलू मिस्त्री से हुई है। इनके तीन बच्चे हैंरू बेटियां लीया और माया, और बेटा नेविल।

एक बात और। टाटा समूह में मेहली मिस्त्री की भविष्य की भूमिका पर सवालिया निशान है, बावजूद इसके कि रतन टाटा के साथ उनके गहरे संबंध थे। टाटा समूह के जानकारों का कहना है कि हालांकि यह सच है कि मेहली मिस्त्री रतन टाटा के बहुत करीब थे, लेकिन वे निश्चित रूप से टाटा ट्रस्ट्स का नेतृत्व करने की क्षमताएं नहीं रखते। अगर उन्हें टाटा ट्रस्ट्स का प्रमुख बनाया जाता, तो इससे एक बहुत बुरा नकारात्मक संदेश जाता कि टाटा समूह ने साइरस मिस्त्री के खिलाफ कथित षडयंत्र रचने वाले शख्स को अहम जिम्मेदारी दे दी।

इसके अलावा, मेहली की नियुक्ति से टाटा समूह से मिस्त्री परिवार और दूरियां बना लेता। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि साइरस मिस्त्री का परिवार टाटा समूह कंपनियों में एक प्रमुख हितधारक है। कोई भी बिजनेस घराना अपने बहुत बड़े अंशधारक की अनदेखी नहीं कर सकता।

बहरहाल, टाटा समूह नोएल टाटा के नेतृत्व में आगे बढ़ते हुए राष्ट्र निर्माण में अपना खास रोल निभाता रहेगा।

विवेक शुक्ला
लेखक और स्तंभकार

हिंदुओं के त्योहार

पर ही क्यों फैलती हैं

अराजकता और हिंसा

हालात यह है कि हिन्दुओं के छोटे से छोटे धार्मिक आयोजन भी बिना पुलिस की सुरक्षा के घेरे के पूर्ण नहीं हो पाते हैं। हिन्दुओं के देवी–देवताओं को कभी कला के तो कभी अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर अपमानित किया जाता है।

यह हिन्दुस्तान का दुर्भाग्य है कि यहां की बहुसंख्यक आबादी को अपने तीज–त्योहार मनाने में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। हिन्दुओं के द्वारा कोई भी धार्मिक आयोजन किया जाता है उस पर मुस्लिम कट्टरपंथियों का साया पड़ जाता है। हिन्दू जब भी कावड़ यात्रा निकाले, माता का जागरण कराये, मूर्ति विसर्जन को जाये या इसी तरह के अन्य कोई आयोजन करे तो मुस्लिम कट्टरपंथी कहीं उस पर पथराव करने लगते हैं तो कहीं रास्ता रोक कर खड़े हो जाते हैं। उनके इस कृत्य का विरोध होता है तो यह लोग तलवारें भांजने लगते हैं। आगजनी और पेट्रोल बम तो आम बात हो गई है, लेकिन पेट्रोल बम फोड़ने वाले तब जरूर आहत हो जाते हैं जब उन्हें कहीं पटाखों की आवाज सुनाई पड़ जाती है।

हालात यह है कि हिन्दुओं के छोटे से छोटे धार्मिक आयोजन भी बिना पुलिस की सुरक्षा के घेरे के पूर्ण नहीं हो पाते हैं। हिन्दुओं के देवी–देवताओं को कभी कला के तो कभी अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर अपमानित किया जाता है। न जाने क्यों पांच टाइम लाउडस्पीकर पर चीखने चिल्लाने वालों को हिन्दुओं के धार्मिक आयोजनों में बजने वाला डीजे बेचौन क्यों कर देता है। इसी तरह से होली के रंग–गुलाल भी एक वर्ग विशेष के चंद कट्टरपंथियों के चलते साम्प्रदायिक हो जाता है। ऐसा नहीं है कि यह कट्टरपंथी तभी भड़कते हों जब हिन्दुओं के द्वारा अपना कोई धार्मिक जुलूस आदि सड़क पर निकाला जाता हो, हद तो तब हो जाती है जब हिन्दुओं के लिये अपने घरों में पूजा करना भी लड़ाई–झगड़े की वजह बन जाता है। गरबा या दुर्गा पूजा के पंडालो तक में यह मुस्लिम चरमपंथी पहुंच कर माहौल खराब करने से नहीं हिचकते हैं। इतना हीं कई बार तो इन अराजक तत्वों को वोट बैंक की राजनीतिक करने वाले नेताओं और पार्टियों का राजनैतिक संरक्षण भी मिल जाता है। यदि ऐसा न होता तो बहराइच में बेरहमी से मारे गये रामगोपाल मिश्र की हत्या पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव एक्स पर वह कथित वीडियो नहीं पोस्ट करते जिसमें रामगोपाल मिश्रा एक मुस्लिम परिवार के घर से हरा झंडा उतार कर भगवा झंडा लगाते हुए दिखाई दे रहा है। अखिलेश इस वीडियों के सहारे रामगोपाल मिश्रा को ही कटघरे में खड़ा कर रहे हैं,जबकि इसका कानूनी पहलू यह है कि यदि रामगोपाल मिश्रा ने हरा झंडा उतार कर वहां भगवा झंडा फहरा भी दिया था तो हत्यारों को उसका कत्ल करने की छूट नहीं मिल जाती है। रामगोपाल मिश्र को मारा ही नहीं गया, उसके साथ हत्यारों ने वहशीपन दिखाते हुए रामगोपाल के नाखून तक बेरहमी के साथ नोंच लिये थे।

ज्यादा पीछे न भी जाया जाये तो हाल फिलहाल में ही इस्लामी कट्टरपंथियों ने देश के अलग–अलग हिस्सों में दुर्गा

पूजा और हिन्दुओं को निशाना बनाया है। मुस्लिम कट्टरपंथियों ने कहीं पंडाल पर पथराव किया गया तो कहीं मूर्ति विसर्जन के जुलूस पर हमला हुआ, जुलूस के रास्तों को लेकर भी विवाद हुआ। उत्तर प्रदेश से लेकर पश्चिम बंगाल और असम तक पथराव और हिंसा हुई है। यह हिंसा हिन्दुओं के त्योहार नवरात्र के साथ ही चालू हो गई थी। हावड़ा के श्यामगंज में 13 अक्टूबर, 2024 को एक मुस्लिम भीड़ ने हिन्दू पंडालों पर हमला किया। मुस्लिम भीड़ ने दुर्गा पूजा पंडालों को नष्ट करना चालू कर दिया। उन्होंने मूर्तियों को आग लगा दी और कई पंडालों को तबाह किया। यह मुस्लिम भीड़ उस घाट पर भी पहुँची जहाँ देवी मूर्तियों का विसर्जन होना था। यहाँ इस भीड़ ने पथराव किया।

बात विशेषकर उत्तर प्रदेश की कि जाये तो यहां के कौशांबी जिले में माँ दुर्गा के विसर्जन जुलूस पर हमला हुआ। इस हमले में जुलूस में शामिल महिला श्रद्धालुओं को भी निशाना बनाया गया। हमले के दौरान तलवारें लहराई गईं और पत्थरबाजी हुई। घटना में कई श्रद्धालुओं को चोटें आई। 12 अक्टूबर, 2024 को हुए इस हमले का आरोप मुस्लिम समुदाय के लगभग एक दर्जन लोगों पर लगा है जिसमें खातूनें भी शामिल हैं। माँ दुर्गा की प्रतिमा को भी क्षतिग्रस्त कर दिया गया और एक महिला से दुष्कर्म की भी कोशिश हुई। पुलिस ने केस दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। इसी तरह से बलरामपुर में दुर्गा पूजा के दौरान इस्लामिक कट्टरपंथियों ने पंडाल में घुसकर महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया। आरोपितों में कलीम, अरबाज, इमरान और मुख्तार शामिल थे, जिन्होंने महिला श्रद्धालुओं से अभद्रता की और पंडाल में लगे भगवा ध्वज को नोचकर नाली में फेंक दिया। महिलाओं ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया गया।

जिला गोंडा के मसकनवा बाजार इलाके में 9 अक्टूबर, 2024 को दुर्गा पूजा पंडाल में मूर्ति स्थापित करने के बाद देवी की आँखों पर से पट्टी हटाई गई थी। इस मूर्ति की स्थापना बीते कई सालों से की जाती है। इस मौके पर यहाँ बड़ी संख्या में हिन्दू इकट्ठा थे। पूजा अर्चना के बाद

कुछ हिन्दू बच्चे इस पंडाल के बाहर पटाखे फोड़ने लगे। पटाखों की आवाज सुन कर पास में रहने वाले मुस्लिम भड़क गए। मुस्लिम परिवार के लोग बाहर निकल कर हिन्दुओं को गालियाँ देने लगे और हमलावर हो गए। उन्होंने पहले हिन्दुओं पर पथराव किया और फिर लाठी डंडों से हमला कर दिया। उधर, कुशीनगर में एक और गंभीर घटना सामने आई, जब दुर्गा पूजा के दौरान मुस्लिम कट्टरपंथियों ने मूर्ति पर पथराव किया। इस घटना में 10 से अधिक लोग घायल हो गए। पुलिस ने स्थिति को काबू में करने के लिए आरोपितों को गिरफ्तार किया और इलाके में सुरक्षा बढ़ा दी। हिंदू समुदाय ने प्रशासन से आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की माँग की। अब बहराइच की हिंसा इसका नया उदाहरण है जहां मूर्ति विसर्जन के लिये जा रहे एक व्यक्ति को बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया गया। जानकारी उन्हीं घटनाओं की है, जो मीडिया में सामने आई हैं या जिनकी जानकारी सोशल मीडिया पर वायरल हुई। बढ़ते इस्लामी कट्टरपंथ को देखते हुए कहा जा सकता है कि कई घटनाएँ संभवतः बाकी शोर शराबे में दब गई होंगी।

कुल मिलाकर कट्टरपंथियों की जेहादी सोच के कारण पिछले कुछ वर्षों से शोभा यात्राओं या फिर प्रतिमा विसर्जन यात्राओं का शांतिपूर्ण माहौल में निकलना कठिन होता जा रहा है। इन धार्मिक यात्राओं पर पत्थरबाजी कई बार दंगों का रूप धारण कर लेती है, जैसा कि बहराइच में हुआ। यहां दुर्गा पूजा विसर्जन यात्रा पर घरों की छतों से पथराव हुआ। एक सतानती की हत्या कर दी गई और उसके बाद क्षेत्र में हिंसा भड़क उठी। प्रश्न यह है कि जब यह सब हो रहा था, तब पुलिस कहां थी? पुलिस की अकर्मण्यता की वजह से ही दूसरे दिन युवक के अंतिम संस्कार को पहले फिर हिंसा भड़क उठी और उग्र लोगों ने कई घरों में तोड़फोड़ की और दुकाने जला दीं। यह ठीक है कि वरिष्ठ अधिकारियों के पहुंचने के बाद हिंसा पर काबू पर लिया गया, लेकिन अहम प्रश्न यह है कि क्या सद्भाव के माहौल की वापसी हो सकेगी और उन तत्वों को सबक सिखाने वाली ठोस कार्रवाई हो सकेगी, जिनके कारण हिंसा का सिलसिला कायम हुआ? सबसे दुखद यह है कि इस तरह की किसी भी घटना के बाद कुछ लोग सवाल खड़े करने लगते हैं कि अमुक क्षेत्र से यात्रा निकाली ही क्यो गई। किसी भी क्षेत्र को हिंदू– मुस्लिम क्षेत्र के रूप में परिभाषित करना क्या उचित है। दरअसल, हिंदू मुस्लिम क्षेत्र की बातें ही विभाजनकारी और शरारत भरा एजेंडा हैं। ऐसे एजेंडे आम तौर पर वोट बैंक की राजनीति के तहत चलाए जाते हैं। इस एजेंडे की काट के साथ यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए किसी भी समुदाय के धार्मिक आयोजन हिंसक तत्वों को शिकार न बनने पाएं। राज्य सरकार को धार्मिक आयोजनों को निशाना बनाने वाले तत्वों के खिलाफ कड़े कदम उठाकर उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए ताकि फिर बहराइच, कौशांबी और गोंडा जैसी घटनाएं न हों।ऐसी घटनाओं से माहौल तो खराब होता ही है, सरकारी सम्पति को भी काफी नुकसान पहुंचता है। बहरहाल, बहाराइच में दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के दौरान रामगोपाल मिश्र की नृशंस हत्या पर विश्व हिंदू परिषद ने आक्रोश व्यक्त किया है। परिषद ने कहा कि पूरे देश में यह ट्रेंड चल पड़ है। कभी शोभायात्रा पर कभी, गरबा पंडाल में, कभी गणेश पूजन पर हमला हो रहा है। हर त्योहार तनाव से गुजर रहा है, जिसे हिंदू समाज स्वीकार नहीं करेगा।

संजय सक्सेना
वरिष्ठ पत्रकार लखनऊ

आतंकियों को पनाह देकर कनाडा बन रहा है दूसरा पाकिस्तान

जैसे पाकिस्तान आतंकवादियों के लिए एक सुरक्षित पनाहगाह बन गया था, वैसे ही अब कनाडा भी भारत–विरोधी तत्वों का गढ़ बनता जा रहा है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि कनाडा सरकार न केवल खालिस्तानी तत्वों को संरक्षण दे रही है, बल्कि भारतीय कानून से फरार आतंकवादियों और अपराधियों को भी शरण दे रही है।

भारत और कनाडा के संबंधों में पिछले कुछ वर्षों में लगातार खराब हो रहे हैं, लेकिन हाल की घटनाओं ने इस रिश्ते में एक नया मोड़ ला दिया है। जहां पहले पाकिस्तान का नाम अक्सर आतंकवाद और भारत–विरोधी गतिविधियों के संदर्भ में लिया जाता था, अब उसी श्रेणी में कनाडा का नाम भी जोड़ा जा रहा है। वरिष्ठ शोधकर्ता सुशांत सरीन ने एक टेलीविजन चर्चा के दौरान कहा, कनाडा अब भारत के लिए नया पाकिस्तान बन गया है। तो क्या वाकई में कनाडा की स्थिति भारत के लिए पाकिस्तान जैसी हो गई है?

भारत और कनाडा के बीच असली दरार तब आई जब जून 2023 में कनाडा के सरे शहर में खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या हुई। इसके बाद, कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की सरकार ने भारत पर इस हत्या में शामिल होने का आरोप लगाया। हालांकि भारत ने कई बार ठोस सबूत मांगे, लेकिन कनाडा इस दिशा में कोई ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सका। इस घटना ने दोनों देशों के कूटनीतिक संबंधों को और अधिक तनावपूर्ण बना दिया। हाल ही में, कनाडा ने भारतीय उच्चायुक्त संजय कुमार वर्मा को 'पर्सन ऑफ इंटरेस्ट' घोषित किया, जिससे भारत में आक्रोश फैल गया। इसके जवाब में, भारत ने अपने राजनयिकों को वापस बुलाने और कनाडाई दूतावास के छह अधिकारियों को निष्कासित करने का कड़ा कदम उठाया। ऐसा कदम पहले भारत और पाकिस्तान के बीच भी देखा गया था, जब पुलवामा हमले के बाद दोनों देशों ने अपने–अपने दूतावास के कर्मियों को निष्कासित किया था।

ट्रूडो की सरकार पर यह आरोप लगाया जा रहा है कि वह खालिस्तानी तत्वों को समर्थन देकर अपने देश में वोट–बैंक की राजनीति कर रही है। यही रणनीति पाकिस्तान ने कश्मीर मुद्दे पर अपनाई थी, जहां उसने कश्मीर को घरेलू राजनीति में वोटों के लिए एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। इसी तरह, ट्रूडो भी कनाडा में सिख वोट बैंक के लिए खालिस्तानी गतिविधियों को बढ़ावा दे रहे हैं। खालिस्तानी संगठन जैसे वर्ल्ड सिख ऑर्गनाइजेशन, खालिस्तान टाइगर फोर्स, और बब्बर खालसा इंटरनेशनल कनाडा में खुलेआम काम कर रहे हैं। भारत सरकार ने इन संगठनों पर कई बार प्रतिबंध लगाने की मांग की, लेकिन कनाडा ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

जैसे पाकिस्तान आतंकवादियों के लिए एक सुरक्षित पनाहगाह बन गया था, वैसे ही अब कनाडा भी भारत–विरोधी तत्वों का

गढ़ बनता जा रहा है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि कनाडा सरकार न केवल खालिस्तानी तत्वों को संरक्षण दे रही है, बल्कि भारतीय कानून से फरार आतंकवादियों और अपराधियों को भी शरण दे रही है। इनमें से कई व्यक्ति पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बार–बार ट्रूडो की वोट–बैंक राजनीति को इस स्थिति के लिए जिम्मेदार ठहराया है। ट्रूडो की सरकार को जगमीत सिंह की न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी का समर्थन प्राप्त है, जिनकी छवि खालिस्तानी समर्थक के रूप में जानी जाती है। इस गठबंधन ने कनाडा को खालिस्तानी तत्वों के प्रति नर्म रुख अपनाने के लिए मजबूर कर दिया है।

क्यों खराब हो रहे हैं भारत-कनाडा के संबंध, जस्टिन ट्रूडो के लिए कितने जरूरी हैं सिख

अलगाववादी सिख नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के मामले में कनाडा के आरोपों पर भारत ने सख्त प्रतिक्रिया दी है। भारत ने कनाडा के छह राजनयिकों को देश छोड़ने का आदेश दिया है। इससे पहले कनाडा ने कहा था कि उसने भारत के छह राजनयिकों को निष्कासित कर दिया है। भारत और कनाडा के संबंध दिन–ब–दिन खराब होते जा रहे हैं। भारत ने अपने उच्चायुक्त संजय कुमार वर्मा समेत छह राजनयिकों को वापस बुला लिया है। वहीं, कनाडा का कहना है कि उसने इन भारतीय राजनयिकों को निष्कासित किया है और उन पर सिख अलगाववादी नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में शामिल होने का आरोप लगाया है। भारत ने इन आरोपों को आधारहीन और अस्वीकार्य बताया है।

सोमवार को भारत ने कनाडा के छह राजनयिकों को देश छोड़ने का आदेश दिया। ये राजनयिक हैं– कार्यकारी उच्चायुक्त स्टीवर्ट रॉस व्हीलर, उप–उच्चायुक्त पैट्रिक हेबर्ट, प्रथम सचिव मैरी कैथरीन जॉली, प्रथम सचिव इआन रॉस डेविड ट्राइट्स, प्रथम सचिव एडम जेम्स चुइपका और प्रथम सचिव पाउला ओर्जुएला। इन्हें 19 अक्टूबर की रात 11रू59 बजे तक भारत छोड़ने का समय दिया गया है। भारत के विदेश मंत्रालय के सचिव जयदीप मजूमदार ने कनाडा के प्रभारी राजदूत को तलब किया था और कहा कि कनाडा सरकार की कार्रवाइयों ने भारतीय राजनयिकों और अधिकारियों की सुरक्षा को खतरे में डाल दिया है।

कनाडा ने भारत के साथ साझा किए गए एक राजनयिक पत्र में भारतीय उच्चायुक्त संजय कुमार वर्मा और पांच अन्य भारतीय राजनयिकों पर खालिस्तान समर्थक हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के मामले में शामिल होने का आरोप लगाया है। बीते शनिवार को वैंकूवर में खालिस्तान समर्थकों ने वर्मा के पुतले को जलाया और उनके सिर पर पांच लाख कनाडाई डॉलर का इनाम रखा। भारत ने कनाडा के इस पत्र को खारिज कर दिया और आरोपों को आधारहीन और अस्वीकार्य बताया है।

कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने सोमवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि पिछले साल कनाडाई नागरिक की हत्या में भारतीय अधिकारियों के शामिल होने के आरोपों से संबंधित सूचनाएं उन्होंने अपने निकट सहयोगियों के साथ साझा की हैं। ट्रूडो की प्रेस कॉन्फ्रेंस से पहले ही भारत ने कनाडा के छह राजनयिकों को निष्कासित कर दिया था।

भारत और कनाडा के संबंधों में इस बड़ी दरार की वजह है 18 जून 2023 को सिख अलगाववादी नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या। वह खालिस्तान टाइगर फोर्स का प्रमुख था। भारत ने निज्जर को आतंकवादी घोषित कर रखा था। प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने 18 सितंबर 2023 को संसद में कहा कि निज्जर की हत्या में भारत की भूमिका की जांच की जा रही है। कनाडा की पुलिस ने 3 मई 2024 को तीन भारतीय नागरिकों को इस मामले में हिरासत में लिया था।

भारत का कहना है कि कनाडा सिख अलगाववादियों को दी जा रही छूट भारत और कनाडा दोनों के लिए हानिकारक है। भारत ने आरोप लगाया है कि कनाडा में संगठित अपराध से जुड़े पंजाब के लोगों को वीजा दिया जा रहा है। कनाडा में अक्तूबर 2025 में चुनाव प्रस्तावित हैं और ट्रूडो सिख समुदाय के समर्थन की उम्मीद कर रहे हैं। कनाडा में सिख आबादी करीब 2.1 फीसदी है।

मेहंदीपुर का बालाजी मंदिर,
जहां प्रेत बाधा से ग्रस्त लोग लगाते हैं हाजिरी

हम बालाजी महाराज के मुख्य दरबार पहुंचे, जहां लंबी कतार थी। मंदिर के अंदर का माहौल शांति और अंधेरे से भरा था। बालाजी महाराज की प्रतिमा पर केसरी रंग चढ़ा हुआ था। मंदिर में फोटो–वीडियो लेने की मनाही थी, जिसे लोग नजरअंदाज कर रहे थे। मंदिर का दूसरा हिस्सा निर्माणाधीन कार्यों के कारण बंद था, और कहा जाता है कि वह प्रेत पीड़ा से ग्रस्त लोगों का मुख्य केंद्र हुआ करता था, जहां उन्हें मुक्ति दिलाई जाती थी।

राजस्थान के मेहंदीपुर बालाजी मंदिर में भूत–प्रेत उतारने के लिए भक्त बालाजी महाराज के सामने अर्जी लगाते हैं। यहां भूत–प्रेतों की पेशी होती है और उनका निर्णय स्वयं बालाजी महाराज सुनाते हैं। बालाजी महाराज के अलावा यहां प्रेतराज सरकार और भैरो बाबा का भी प्रसिद्ध मंदिर है।

यह मंदिर दौसा जिले में स्थित है और दिल्ली से करीब 200 किलोमीटर दूर है। मेहंदीपुर बालाजी का यह मंदिर मुख्य हाइवे से तीन किलोमीटर अंदर सिकराय गांव में स्थित है। बाहर से यह किसी अन्य प्रसिद्ध धार्मिक स्थल जैसा ही दिखाई देता है कृ फूलों की माला और पूजा सामग्री की दुकानें, खिलौनों, कपड़ों और सजावटी वस्तुओं के स्टॉल, और भक्ति गीतों की गूंज। बच्चों के माथे पर 'जय श्री राम' और 'जय हनुमान' की मोहर लगाने वाले बच्चे भी दिखते हैं। पर यहां आने पर सबसे अलग दिखते हैं वे लोग जो श्प्रेत बाधाश से पीड़ित होते हैं, चीखते–चिल्लाते हैं और बालाजी महाराज के सामने अर्जी लगाते हैं।

मंदिर के आसपास लोग बताते हैं कि जैसे ही पीड़ित लोग यहां आते हैं, उनके अंदर का प्रेत अपनी हरकतें शुरू कर देता है। मंदिर की चौखट पर आते ही जिद्दी से जिद्दी प्रेत भी शांत हो जाता है। यदि कोई प्रेत बहुत जिद्दी होता है,

तो लोग उसे पकड़कर मंदिर लाते हैं। जैसे ही व्यक्ति बालाजी महाराज की चौखट पार करता है, प्रेत का प्रभाव कम होने लगता है।

हमारे मंदिर पहुंचने पर एक व्यक्ति बोतलों में पानी भरता दिखा। बताया गया कि इसे घर में रखने से नकारात्मक शक्तियां दूर रहती हैं। मंदिर के मुख्य द्वार पर एक महिला खुले बालों में जोर से सर झटक रही थी। पास में एक व्यक्ति तालियां बजाकर बालाजी महाराज और प्रेतराज सरकार के जयकारे लगा रहा था। मंदिर के सामने कई लोग इसी तरह रो रहे थे,

चिल्ला रहे थे, और विलाप कर रहे थे। इनमें महिलाओं की संख्या अधिक थी, जबकि पुरुष कम थे।

मेहंदीपुर बालाजी धाम में तीन देवताओं की पूजा होती हैरू बालाजी महाराज, प्रेतराज, और भैरो बाबा। बालाजी महाराज का मुख्य मंदिर नीचे पहाड़ी की तलहटी में है, जबकि प्रेतराज और भैरो बाबा के मंदिर पहाड़ों पर हैं, जिन्हें यहां तीन पहाड़ के नाम से जाना जाता है।

हम बालाजी महाराज के मुख्य दरबार पहुंचे, जहां लंबी कतार थी। मंदिर के अंदर का माहौल शांति और अंधेरे से भरा था। बालाजी महाराज की प्रतिमा पर केसरी रंग चढ़ा हुआ था। मंदिर में फोटो–वीडियो लेने की मनाही थी, जिसे लोग नजरअंदाज कर रहे थे। मंदिर का दूसरा हिस्सा निर्माणाधीन कार्यों के कारण बंद था, और कहा जाता है कि वह प्रेत पीड़ा से ग्रस्त लोगों का मुख्य केंद्र हुआ करता था, जहां उन्हें मुक्ति दिलाई जाती थी।

मंदिर से थोड़ा आगे एक पहाड़ तीन हिस्सों में विभाजित है। यहाँ एक सीढ़ीनुमा रास्ता ऊपर की ओर जाता है। चढ़ाई के दौरान बाईं तरफ घना जंगल और हनुमान जी की 151 फीट ऊंची प्रतिमा दिखाई देती है, जबकि दाईं ओर कुछ दुकानें और छोटे–छोटे मंदिर हैं। इन मंदिरों में दरबार भी लगता है, जहाँ तंत्र विद्या के जानकार भूत–प्रेत जैसी समस्याओं का निवारण करते हैं। चढ़ाई के दौरान ऐसे कई दरबार दिखाई दिए, जहाँ भूत–प्रेत जैसी बाधाओं से ग्रस्त लोग निवारण के लिए आए थे। अधिकतर लोग इस विषय पर खुलकर बात करने से बचते दिखे। तीसरे पहाड़ के अंतिम मंदिर में प्रेतराज सरकार और भैरो बाबा विराजमान हैं। यहाँ रास्ते में लोगों के हाथ से पानी की बोतलें, केले, और प्रसाद की थैलियां छीनने वाले बंदरों का झुंड था।

मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही हमारी नजर जोर–जोर से सिर झटकती दो महिलाओं पर पड़ी। वहीं बगल में एक मंडली भजन–कीर्तन कर रही थी। प्रवेश द्वार पर ही मंदिर के महंत से भेंट हुई। मंदिर के मुख्य महंत मोहनलाल ने बताया कि कई पीढ़ियों से उनका परिवार इस स्थान की देखरेख कर रहा है। तीन

अब मेहंदीपुर बालाजी में प्रेत बाधा उतारने का काम छुपकर भी किया जाने लगा है। यहां चोरी–छिपे दरबार लगते हैं, जिनमें भूत–प्रेत उतारने का दावा किया जाता है। ये दरबार मेहंदीपुर बालाजी की अलग–अलग धर्मशालाओं में आयोजित होते हैं। इन दरबारों में वही लोग जा सकते हैं जिन पर प्रेत संकट है या जिनके परिवार में कोई पीड़ित है।

पहाड़ पर सबसे पुराना मंदिर पंचमुखी मंदिर है, जहाँ 52 भैरव का स्थान है। प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति की अरदास यहीं लगाई जाती है। अरदास के बाद पेशी लगती है और प्रेत उतारने की प्रक्रिया शुरू होती है। तीन पहाड़ पर पंचमुखी हनुमान का मंदिर, भोलेनाथ के 12 शिवलिंग, मां मनसा देवी, पितांबरी माता, अंजनी माता की मूर्तियां और भगवान विष्णु व माता लक्ष्मी की प्रतिमा भी विराजमान हैं। मंदिर में बाबा श्री गोरक्षक नाथ की प्रतिमा भी है।

इसके आगे 56 कलवे, 64 योगिनी, और 52 भैरव शिला के रूप में स्थित हैं। महंत ने बताया कि ये स्वयंभू हैं, इन्हें स्थापित नहीं किया गया है। इनका कब और कैसे प्रकट होना हुआ, इसका कोई ज्ञान नहीं है, पर आज इनके आशीर्वाद से लोगों की समस्याओं का समाधान हो रहा है। मंदिर के बाहरी हिस्से में प्रेतराज और कोतवाल जी की प्रतिमा है। माना जाता है कि यदि किसी पर प्रेत का साया हो, तो प्रेतराज उसे मुक्ति दिलाते हैं।

मंदिर के दूसरे हिस्से में श्री महाकाल भैरो का एक छोटा मंदिर है। यहाँ के एक सेवादार ने बताया कि प्रेत से बंधन को काटने की प्रक्रिया में तीन दिन लगते हैं। इस दौरान भैरो बाबा को शराब और सिगरेट चढ़ाई जाती है। खुद महंत शराब की बोतल खोलकर चढ़ाते हैं और सिगरेट जलाकर उनके पास रखते हैं। मान्यता है कि इससे बाबा प्रसन्न होते हैं। प्रेत से बंधन काटने के लिए अन्य सामग्री जैसे नारियल, नींबू, और सफेद धागा भी उपयोग में लाए जाते हैं, जिन्हें मंदिर के बाहर प्रसाद के रूप में खरीदा जा सकता है। प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को पहले धागे से बांधकर उसके सिर पर नींबू रखकर चाकू से काटा जाता है, फिर धागे को भी काटा जाता है। इसके बाद मरीज बाबा का आशीर्वाद लेता है। कई महिलाएं वहाँ प्रेत बाधा से ग्रस्त दिखाई दीं, जिनकी आँखों में भयावहता थी। कुछ महिलाओं ने अपने बाल खोले हुए थे और वे जोर–जोर से सिर झटकते हुए चीख रही थीं।

मंदिर परिसर में काली मां का एक छोटा सा मंदिर भी है। मेहंदीपुर बालाजी में यह तीन पहाड़ों का आखिरी मंदिर है। जब आप मंदिर के एक कोने में जाएंगे, तो आपको वहां कई ताले लटके हुए मिलेंगे। महंत ने बताया कि प्रेत बाधा से ग्रस्त लोग यहां ताले बांधकर जाते हैं। ताला लगाने का मतलब होता है कि जो भूत–प्रेत उस व्यक्ति पर आया है, उसे उसके शरीर से निकालकर ताले में बंद कर दिया गया है। महंत ने हमें मंदिर का प्राचीन नीम का पेड़ भी दिखाया, जिसे आज तक कोई नहीं काट सका है। महंत का कहना है कि जब भी इस प्राचीन पेड़ को काटने की कोशिश की गई, कुछ न कुछ गलत हुआ। उसी पेड़ के पास एक चाबुक रखा था जिसके बारे में कहा गया कि जिद्दी प्रेत को काबू करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। हालांकि महंत ने यह भी बताया कि चाबुक मारने या लोगों को बेड़ियों से बांधने की परंपरा अब पुरानी हो चुकी है और अब ऐसा नहीं होता।

अब मेहंदीपुर बालाजी में प्रेत बाधा उतारने का काम छुपकर भी किया जाने लगा है। यहां चोरी–छिपे दरबार लगते हैं, जिनमें भूत–प्रेत उतारने का दावा किया जाता है। ये दरबार मेहंदीपुर बालाजी की अलग–अलग धर्मशालाओं में आयोजित होते हैं। इन दरबारों में वही लोग जा सकते हैं जिन पर प्रेत संकट है या जिनके परिवार में कोई पीड़ित है। कुछ स्थानीय दुकानदारों ने इस बारे में थोड़ी बात की और बताया कि प्रेत उतारने का असली खेल इन दरबारों में ही देखा जा सकता है। दिनभर इन दरबारों में पेशियां लगती हैं और पीड़ितों की भयावह चीखें सुनाई देती हैं। पहले ये प्रक्रियाएं मुख्य मंदिर परिसर में होती थीं, जिन्हें कुछ साल पहले बंद कर दिया

गया।

शाम करीब साढ़े 6 बजे हमने पहाड़ से नीचे उतरना शुरू किया और आधे घंटे में बालाजी महाराज के मुख्य मंदिर वापस लौट आए। वहां का नजारा अब पूरी तरह बदल चुका था। चौराहे पर एक बड़ी स्ट्रीट लाइट पूरे अंधेरे में मशाल की तरह जल रही थी। दुकानों के बल्ब जुगनू की तरह चमक रहे थे और सड़क पर मेले जैसा माहौल था। कुछ महिलाएं पूजा की थाल लेकर मुख्य मंदिर की ओर बढ़ रही थीं और लाउडस्पीकर पर चल रहे भजन के साथ ताल मिला रही थीं। आस–पास बच्चों की चहल–पहल भी थी।

बालाजी महाराज की आरती का समय हो चुका था। लोग मंदिर के सामने और पास लगी बड़ी स्क्रीन पर आरती देख रहे थे। मंदिर के सामने पहुंचते ही एक दृश्य ने हमें रोक लिया। भय, चिंता, श्रद्धा और चमत्कार का यह दृश्य ऐसा था जिसमें लगभग 20 से अधिक लोग प्रेत बाधा से ग्रस्त नजर आ रहे थे। कहीं महिलाएं बाल खोलकर सर झटक रही थीं, तो कहीं पुरुष जमीन पर सिर पटक रहे थे। इनकी खौफनाक चीखों ने हमारे मन में दहशत भर दी थी। अचानक भीड़ में हमारी नजर एक महिला पर पड़ी, जो दर्दनाक चीखें मार रही थी। उसके पास बैठे दो बच्चे और पति जोर–जोर से उसके लिए प्रार्थना कर रहे थे और जयकारे लगा रहे थे, ष्मारो बाबा–मारो बाबा,ष्जय हो प्रेतराज सरकार की।ष

आरती समाप्त होते ही भीड़ धीरे–धीरे छंटने लगी। कुछ लोग प्रसाद लेने के लिए कतार में खड़े रहे, जबकि कुछ बाजार में खाने के स्टॉल की ओर बढ़ गए। एक होटल पर पहुंचे तो मेन्यू में बड़े अक्षरों में लिखा था, ष्शुद्ध और शाकाहारी, बिना लहसुन–प्याज का।ष होटल मालिक ने बताया कि आसपास के सारे होटलों में ऐसा ही खाना मिलता है क्योंकि भक्त लहसुन–प्याज का परहेज करते हैं। बालाजी आने से पहले और जाने के बाद भी लोग कई दिनों तक इन्हें नहीं खाते हैं।

जब आप मेहंदीपुर बालाजी जाते हैं, तो वहां की गलियों में आप प्रेत बाधा से ग्रस्त लोगों को देखकर डर का अनुभव कर सकते हैं। होटल और धर्मशालाओं में भी अक्सर प्रेत बाधा से जूझते लोगों की आवाजें सुनाई देती हैं, जिनकी चीखें इतनी भयावह होती हैं कि सुनने वालों को डर के मारे चादर में छुपना पड़ता है।

अफवाहः मेहंदीपुर बालाजी का प्रसाद खाने से भूत पीछे पड़ जाते हैं

राजस्थान के दौसा जिले में स्थित मेहंदीपुर बालाजी मंदिर के बारे में लोगों के बीच कई अनोखी मान्यताएं हैं। कुछ लोग मानते हैं कि यहां का प्रसाद खाने से भूत–प्रेत पीछा करते हैं। यह भी कहा जाता है कि यहां भूत बाधा का इलाज यातनाएं देकर किया जाता है।

लोगों का कहना है कि मंदिर का प्रसाद खाने या घर ले जाने से भूत पीछा कर सकते हैं, और यहां भूत–प्रेत से मुक्ति के लिए यातनाएं देकर इलाज किया जाता है। लोगों को कोड़े मारे जाते हैं, जंजीरों में बांधा जाता है, और उनके शरीर पर भारी–भरकम पत्थर रखे जाते हैं। इन मान्यताओं की सच्चाई जानने के लिए हम मंदिर पहुंचे।

वहां हमारी मुलाकात विजयनाथ योगी से हुई, जो पहाड़ पर स्थित अंजनी माता के प्राचीन मंदिर के मुख्य पुजारी हैं। उन्होंने बताया कि बालाजी महाराज के दर्शन के बाद अंजनी माता और शक्ति स्थल के दर्शन होते हैं। अंत में प्रेतराज, भैरों बाबा, घाटे वाले बाबा और समाधि वाले बाबा के दर्शन के साथ यात्रा पूरी होती है। सफेद लिबास में कंठी माला धारण किए हुए योगी जी ने बताया कि जिन लोगों पर भूत–प्रेत या नकारात्मक शक्तियों का असर होता है, उन्हें यहां दर्शन के लिए लाया जाता है। प्रसाद के रूप में दो लड्डू खिलाए जाते हैं और इससे बाबा का चमत्कार दिखने लगता है। बाबा के आशीर्वाद से यहां सैकड़ों–हजारों लोग ठीक होकर जाते हैं।

विजयनाथ योगी जी, जो कभी पेशेवर इंजीनियर रहे हैं और एचसीएल कंपनी में नौकरी भी कर चुके हैं, ने समाज सेवा के लिए बालाजी की सेवा का मार्ग चुना। वे कहते हैं कि पहाड़ पर रहकर बाबा और माता अंजनी की सेवा में जो आनंद है, वह किसी और चीज में नहीं है। उनकी चौथी पीढ़ी यहां माता अंजनी की सेवा कर रही है।

मेहंदीपुर बालाजी में अक्सर महिलाओं को इसलिए लाया जाता है क्योंकि माना जाता है कि उनका आत्मबल कमजोर होता है और भावनात्मक रूप से वे जल्दी प्रभावित होती हैं, जिससे भूत–प्रेत उन पर जल्दी असर कर लेते हैं। योगी जी ने बताया कि पहले यहां भूत–प्रेत निकालने के लिए लोगों पर भारी पत्थर रख दिए जाते थे, जंजीरों से बांधा जाता था, और कोड़े मारे जाते थे। लेकिन मानवाधिकार आयोग के संज्ञान के बाद इस तरह की गतिविधियों पर 15–20 साल पहले रोक लगा दी गई। अब सिर्फ बाबा का आशीर्वाद ही पर्याप्त माना जाता है।

मंदिर का प्रसाद घर लाने या बांटने में कोई बाधा नहीं है। हालांकि, केवल उन लोगों का प्रसाद नहीं खाना चाहिए जिन पर भूत–प्रेत का असर होता है। पहले लोग प्रसाद घर ले जाने से डरते थे, पर मंदिर के महंत नरेश पुरी महाराज ने स्पष्ट किया कि मंदिर का प्रसाद निसंकोच घर ला सकते हैं और दूसरों में बांट भी सकते हैं। शाम के करीब चार बजे दो कश्मीरी पंडित भाइयों से मुलाकात हुई जो बाबा के प्रति अपनी गहरी आस्था के चलते यहां आए थे। उन्होंने बताया कि यहां आकर सच्ची श्रद्धा से जो भी मांगा जाए, वह जरूर पूरा होता है। वे कहते हैं कि यहां कोई भी व्यक्ति प्रसाद खा सकता है और घर ले जा सकता है।

अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव के साथ गर्भपात के अधिकार पर होगा जनमत संग्रह

इस बार चुनाव के साथ, 10 अमरीकी राज्यों में मतदाता गर्भपात के अधिकार पर जनमत संग्रह में भी हिस्सा लेंगे, जो पहली बार है जब एक साथ 10 राज्य इतने बड़े मुद्दे पर मतदान कर रहे हैं।

अमरीका में 5 नवंबर को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के लिए इस बार दो प्रमुख घरेलू मुद्दे गर्भपात का अधिकार और प्रवास नीतिकृकाफी अहमियत रखते हैं। वहीं, विदेश नीति के मोर्चे पर यूक्रेन युद्ध और गाजा संकट सबसे बड़े मुद्दे बने हुए हैं। गर्भपात का अधिकार का मुद्दा खास तौर से इसलिए महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि 2022 में अमरीकी सुप्रीम कोर्ट ने गर्भपात के अधिकार पर संघीय गारंटी को समाप्त कर दिया था। इस बार चुनाव के साथ, 10 अमरीकी राज्यों में मतदाता गर्भपात के अधिकार पर जनमत संग्रह में भी हिस्सा लेंगे, जो पहली बार है जब एक साथ 10 राज्य इतने बड़े मुद्दे पर मतदान कर रहे हैं। यह मुद्दा संवैधानिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति की मौलिक स्वतंत्रता से जुड़ा है, जो अमरीकी संविधान के चौदहवें संशोधन के तहत संरक्षित है।

इसी बीच, चुनाव से तीन सप्ताह पहले पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने प्रवासियों पर कड़ा रुख अपनाते हुए डेमोक्रेट पार्टी पर निशाना साधा है। कोलोरोडो के ऑरोरा शहर में एक रैली में ट्रंप ने कहा कि प्रवासियों ने ऑरोरा पर कब्जा कर लिया है और इसे श्वेनेजुएला संक्रमणश से मुक्त करना जरूरी है। ट्रंप ने अपने प्रतिद्वंद्वियों को श्कचराश और प्रवासियों को श्जानवरश और श्असभ्यश कह कर संबोधित किया।

कमला हैरिस और ट्रंप के बीच चुनावी प्रतिस्पर्धा भी कड़ी हो रही है। ताजा सर्वेक्षणों के अनुसार, सितंबर में हैरिस को राष्ट्रीय स्तर पर 56% समर्थन मिल रहा था, जो अब घटकर 51% रह गया है, जबकि ट्रंप को 49% समर्थन प्राप्त है। इस तरह का ट्रेंड यूएसए टूडे और न्यूयॉर्क टाइम्स जैसे समाचार पत्रों में भी देखा जा रहा है, और चेतावनी दी जा रही है कि अगर हैरिस इसी तरह अपनी बढ़त खोती रहीं तो ट्रंप आगामी चुनाव में 295 इलेक्टोरल वोट हासिल कर सकते हैं।

एपी की रिपोर्ट के अनुसार, ट्रंप अपनी रैलियों में चीन में प्रिंट की गई श्गॉड ब्लेस द यूएसएश बाइबल बांट रहे हैं। फरवरी और मार्च के बीच चीन के हांग्जो से इसकी लगभग 120,000 प्रतियां अमरीका भेजी गईं। वहीं, हैरिस अरब और मुस्लिम समुदायों का समर्थन पाने के लिए प्रयासरत हैं, भले ही उन्होंने इजरायल को समर्थन देने का वादा किया है। उन्होंने इन समुदायों के नेताओं से मुलाकात भी की है और डेमोक्रेटिक पार्टी से जुड़े मुस्लिम समूहों का समर्थन प्राप्त किया है। साथ ही, हैरिस ने अपनी मेडिकल फिटनेस रिपोर्ट जारी की है, जिसमें उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा बताया गया है।

स्रोत: प्रोजेक्ट फाइव थर्टी एट

सभी सर्वेक्षणों का औसत समर्थन

कमला हैरिसः 48.5% डोनाल्ड ट्रंपः 46%

- **स्विंग राज्यों में स्थिति**
- **पेंसिल्वेनिया: हैरिस 47.9%, ट्रंप 47.5%**
- **विस्कॉन्सिन: हैरिस 47.9%, ट्रंप 47.3%**
- **नेवादा: हैरिस 47.6%, ट्रंप 47.1%**
- **मिशिगन: हैरिस 47.7%, ट्रंप 47.0%**
- **जॉर्जिया: हैरिस 47.3%, ट्रंप 48.2%**
- **नॉर्थ कैरोलिना: हैरिस 47.3%, ट्रंप 48.2%**

कांग्रेस के साथ ही आगे बढ़ेगा
अखिलेश का समाजवाद

यूपी में उपचुनाव वाली 10 सीटों में सपा 8 पर अपने उम्मीदवार उतारेगी। शेष दो सीटें उसने कांग्रेस के लिये छोड़ दी हैं। जबकि कांग्रेस पांच सीटों की मांग कर रही थी, वैसे पांच सीटों वाली उसकी मांग तर्कसंगत भी नहीं थी।

अजय कुमार, लखनऊ

कांग्रेस आलाकमान और गांधी परिवार भले ही यूपी से बाहर समाजवादी पार्टी को अपने तेवर दिखाने का कोई मौका नहीं छोड़ रहा हो, लेकिन उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी चाह कर भी कांग्रेस को अनदेखा नहीं कर पा रही है। इसे समाजवादी पार्टी की सियासी मजबूरी कहें या फिर समय की मांग जिसकी वजह से हरियाणा में खाली हाथ रहने के बावजूद समाजवादी पार्टी यूपी में कांग्रेस के साथ रिश्ता बनाए रखेगी। यूपी में उपचुनाव वाली 10 सीटों में सपा 8 पर अपने उम्मीदवार उतारेगी। शेष दो सीटें उसने कांग्रेस के लिये छोड़ दी हैं। जबकि कांग्रेस पांच सीटों की मांग कर रही थी, वैसे पांच सीटों वाली उसकी मांग तर्कसंगत भी नहीं थी।

सपा मुखिया अखिलेश यादव ने गाजियाबाद और खैर विधानसभा सीट कांग्रेस के लिए छोड़ने का फैसला किया है। यूपी में उपचुनाव वाली 10 सीटों में सपा 8 पर अपने उम्मीदवार उतारेगी। सपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी ने

बताया कि उपचुनाव के लिए हुए समझौते के तहत अलीगढ़ की खैर विधानसभा सीट के साथ गाजियाबाद सीट पर कांग्रेस अपना उम्मीदवार उतारेगी। वैसे इसे सपा का डैमेज कंट्रोल भी माना जा रहा है। हरियाणा में कांग्रेस की करारी हार के अगले दिन ही सपा ने यूपी में छह सीटों पर उपचुनाव के उम्मीदवार घोषित कर दिए थे। इसे कांग्रेस के नेता नाराज हो गये थे। कांग्रेस के यूपी प्रभारी अविनाश पांडेय ने भी सीटों के बंटवारे को लेकर बातचीत से इंकार कर दिया था। सूत्रों का कहना है कि गत दिनों जम्मू–कश्मीर में उमर अब्दुल्ला के शपथ ग्रहण के दौरान राहुल व अखिलेश की मुलाकात के बाद सीट बंटवारे पर सहमति बनी। वैसे कइ बार अखिलेश कह चुके हैं कि यूपी में इंडिया गठबंधन जारी रहेगा।

बात उम्मीदवारों की कि जाये तो समाजावादी पार्टी ने बसपा के राष्ट्रीय महासचिव मुनकाद अली की बेटी सुंबुल राणा को मुजफ्फरनगर की मीरापुर सीट से उम्मीदवार बनाया है। गत दिवस स्थानीय नेताओं व जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक के बाद सपा मुखिया अखिलेश यादव ने सुंबुल का नाम तय किया है। सुंबुल बसपा के पूर्व सांसद कादिर राणा की बहू हैं। कादिर राणा इस समय सपा में हैं। मुनकाद और कादिर का सियासी रिश्ता 2010 में पारिवारिक रिश्ते में बदला था, तब कादिर भी बसपा में थे। 2022 के विधानसभा चुनाव के पहले कादिर सपा में शामिल हो गए थे। मीरापुर सीट सपा

के साथ गठबंधन में रालोद ने जीती थी। हालांकि, लोकसभा चुनाव के पहले रालोद ने भाजपा का साथ पकड़ लिया। मीरापुर के विधायक चंदन चौहान के बिजनौर से सांसद बनने के बाद यहां उपचुनाव हो रहा है। सपा अब तक उपचुनाव वाली सात सीटों पर उम्मीदवार घोषित कर चुकी है। इसमें छह टिकट नेताओं के परिवार में ही गए हैं। अल्पसंख्यकों की भागीदारी का संदेश देने के लिए अखिलेश ने अब तक तीन टिकट मुस्लिमों को दिए हैं।

बहरहाल, नौ विधान सभा सीटों पर चुनाव के लिये सभी दल पूरी मेहनत कर रहे हैं, वहीं मिल्कीपुर उपचुनाव टलने को लेकर सपा और भाजपा के बीच आरोप–प्रत्यारोप बढ़ता जा रहा है। अब भाजपा ने सपा पर चुनाव टालने का आरोप लगाया है। जब मिल्कीपुर का चुनाव घोषित नहीं किया गया तो सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने भाजपा को घेरा था। और उन्होंने एक्स पर पोस्ट करके तंज किया था कि जिसने जंग टाली है, उसने जंग हारी है। वहीं, मिल्कीपुर के पूर्व विधायक गोरखनाथ ने इसका जवाब देते हुए कहा है कि भाजपा नहीं, बल्कि सपा डर गई है। यही वजह है कि उन्होंने (गोरखनाथ) अपनी याचिका वापस लेने की अपील कोर्ट से की। कोर्ट में गुरुवार 17 अक्टूबर को सुनवाई थी। मैं वहां पहुंचा तो देखा कि सपा सांसद अवधेश प्रसाद वहां एक दर्जन वकील भेज दिए हैं। इस बात पर बहस होने लगी कि ऐसे आप याचिका वापस नहीं सकते। इससे साफ है कि समाजवादी पार्टी डर गई है और वह चुनाव नहीं चाहती। कुल मिलाकर कांग्रेस और सपा के रिश्तों की बात की जाये तो अभी ऐसा नहीं लगता है कि सपा और कांग्रेस की राहें जुदा होने वाली है। फिलहाल अखिलेश का समाजवाद कांग्रेस के साथ ही आगे

यूपी में बड़े दिल की बात करने वाले अखिलेश महाराष्ट्र में क्यों हो गये तंग दिल

सियासत भी अजब–गजब है यहां नेता साथ होकर भी अलग–अलग नजर आते हैं और अलग–अलग होते हुए भी साथ–साथ नजर आना चाहते हैं। विचारों की बात तो बेईमानी हो गई है। राजनीति का इससे अधिक गिरगिटी रंग क्या हो सकता है जो समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के नेता इंडी गठबंधन के नाम पर साथ–साथ होने का दम भरते हैं, लेकिन चुनाव मैदान में यूपी से लेकर महाराष्ट्र तक अपनी ढपली, अपना राग छेड़ते नजर आते हैं। यूपी के उप चुनाव में सपा ने कांग्रेस को एक भी सीट नहीं दी, वहीं महाराष्ट्र विधान सभा चुनाव में कांग्रेस के गठबंधन वाले महाअघाड़ी गठबंधन ने समाजवादी पार्टी को ठेंगा दिखा दिया। बस फर्क यह है कि यूपी में समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस को एक भी सीट नहीं दी तो कांग्रेस ने चुनाव रेस से अपने को साइड लाइन कर लिया,लेकिन महाराष्ट्र में जब सपा को एक भी सीट नहीं देकर हासिये पर खड़ा किया गया तो समाजवादी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में बगावती रूप अख्तियार कर लिया। समाजवादी पार्टी महाराष्ट्र में नौ सीटों पर चुनाव लड़ना चाह रही थी।

गौरतलब हो, महाविकास अघाड़ी और सपा के बीच सीटों के बंटवारे को लेकर 29 अक्टूबर मंगलवार को नामांकन के अंतिम समय तक बात नहीं बन पाई। महाविकास अघाड़ी से 288 सीटों में से पांच सीटों की उम्मीदें लगाए बैठी सपा ने तिलमिला कर नौ सीटों पर अपने प्रत्याशियों का नामांकन कराकर कांग्रेस और उनके सहयोगी दलों को आईना दिखा दिया। हालांकि, पार्टी के सूत्रों के मुताबिक यह तय हो गया है कि इसमें सपा के मौजूदा विधायक अबु आजमी और रईस शेख महाविकास अघाड़ी के तहत चुनाव लड़ेंगे। शेष सात उम्मीदवार सपा ने उतारे हैं। अब चार नवंबर को नाम वापसी के बाद महाविकास अघाड़ी में सपा की स्थिति साफ हो सकेगी। सपा ने जिन सीटों पर प्रत्याशी उतारे हैं उसमें धुले सिटी और मालेगांव सेंट्रल में सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पिछले दिनों जनसभा करके महाराष्ट्र चुनाव अभियान की शुरुआत की थी। पिछले चुनाव में सपा ने मुंबई की मानखुर्द शिवाजीनगर और ठाणे की भिवंडी ईस्ट सीटें जीती थीं। सपा इसके साथ तीन और सीट मांग रही थी। वहीं, यूपी में सपा से चोट खाई कांग्रेस हरियाणा की तरह महाराष्ट्र में भी सपा को तवज्जो नहीं दे रही है। कहा जा रहा है सपा ने दबाव की राजनीति अपनाते हुए पांच सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारने की घोषणा पहले ही कर दी थी लेकिन अब उसने कुल नौ सीटों पर अपने उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं। सपा के प्रत्याशियों की बात की जाये तो उसने मानखुर्द शिवाजीनगर और भिवंडी ईस्ट के साथ–साथ मालेगांव सेंट्रल से शान–ए–हिंद निहाल अहमद, धुले सिटी से इरशाद जागीरदार, भिवंडी वेस्ट से रियाज आजमी, तुलजापुर से देवानंद साहेबराव रोचकरी, परांडा से रेवण विश्वनाथ भोसले, औरंगाबाद पूर्व से डॉ. अब्दुल गफ्फार कादरी सय्यद और भायखला से सईद खान को उम्मीदवार बनाया गया है।

खैर, यहां अखिलेश की चर्चा उनके एक बयान को लेकर भी हो रही है। दरअसल, गठबंधन सियासत को लेकर समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव हमेशा से बड़ा दिल दिखाने का दावा करते रहे हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में जब कांग्रेस और बसपा के बीच बातचीत की खबरों पर बात हुई तब भी अखिलेश ने कहा था कि भाजपा को हराने के लिए हम बड़ा दिल दिखाने को तैयार हैं। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस से सीट शेयरिंग के मुद्दे पर भी अखिलेश ने बड़े दिल की बात की थी,लेकिन ऐन चुनाव के वक्त महाराष्ट्र में उनके रुख में बदलाव को विपक्षी गठबंधन के लिए शुभ संकेत नहीं माना जा रहा है। वहीं अखिलेश से यह भी पूछा जा रहा है कि यूपी में बड़े दिल की बात करने वाले सपा प्रमुख महाराष्ट्र में तंग दिल कैसे हो जाते हैं।

करहल में मुलायम कुनबे को एक साथ मिलेगी जीत की खुशी और हार का गम

यूपी में नौ सीटों पर उपचुनाव हो रहा है, लेकिन सबसे अधिक चर्चा करहल विधान सभा सीट की ही हो रही है। यहां बीजेपी और समाजवादी पार्टी के बीच कड़ा मुकाबला होने के आसार नजर आ रहे हैं, लेकिन मैदान में बसपा का उम्मीदवार भी ताल ठोंक रहा है।

संजय सक्सेना, लखनऊ

उत्तर प्रदेश के जिला मैनपुरी की करहल विधानसभा सीट पर उपचुनाव के लिये बिसात बिछ गई है। यूपी में नौ सीटों पर उपचुनाव हो रहा है, लेकिन सबसे अधिक चर्चा करहल विधान सभा सीट की ही हो रही है। यहां बीजेपी और समाजवादी पार्टी के बीच कड़ा मुकाबला होने के आसार नजर आ रहे हैं, लेकिन मैदान में बसपा का उम्मीदवार भी ताल ठोंक रहा है। मगर सबसे रोचक यह है कि यहां हारेगा भी मुलायम परिवार का नेता और जीतेगा भी मुलायम के घर का लीडर। इस सीट पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने अपने भतीजे पूर्व सांसद तेज प्रताप यादव को मैदान में उतारा गया है जिनको भाजपा के प्रत्याशी और अपने फूफा यानी चाचा धर्मेंद्र यादव के सगे बहनोई अनुजेश यादव से चुनाव के मैदान में टक्कर मिल रही हैं। सपा मुखिया अखिलेश यादव 2022 में यहां से विधायक चुने गये थे और 2024 में सांसद बनने के बाद अखिलेश ने इस सीट को छोड़ दिया था। ऐसे में उनकी प्रतिष्ठा भी दांव पर लगी है। बीजेपी मिल्कीपुर विधानसभा सीट के बाद इस सीट को लेकर काफी ज्यादा उत्साहित हैं। वहीं चुनावी दंगल में अखिलेश यादव भी खूब पसीना बहा रहे हैं। नामांकन में तेज प्रताप के साथ मौजूद रहकर उन्होंने समर्थकों को संदेश दिया था और इसके बाद स्थानीय नेताओं को लगातार निर्देश भी दे रहे हैं।

करहल विधानसभा सीट की बात की जाये तो मैनपुरी जिले में आने वाली इस सीट को सपा नेता अपनी पुश्तैनी सीट बताते हैं। वैसे भी यह इलाका मुलायम परिवार का गढ़ माना जाता है। इस सीट ही नहीं आसपास की कई लोकसभा और विधानसभा सीट पर भी सपा का लंबे समय से वर्चस्व चला आ रहा है। वर्ष 1993 से अब तक सपा कहरल सीट पर केवल एक बार पराजित हुई है। बीते चार चुनावों से तो सपा के प्रत्याशी लगातार जीत रहे हैं। अखिलेश यादव ने 2022 के विधान सभा चुनाव में यहां 67 हजार से ज्यादा वोटों के अंतर से बड़ी जीत हासिल की थी। कुछ माह पूर्व हुए लोकसभा चुनाव में कन्नौज का सांसद बनने के बाद अखिलेश यादव ने इस सीट से त्यागपत्र दिया था, जिसके बाद अब यहां उपचुनाव हो रहा है। सपा प्रत्याशी की बात की जाये तो तेज प्रताप यादव इससे पहले वर्ष 2014 में मैनपुरी लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में लड़े थे और सांसद बने थे। उनके मैदान में उतरने के बाद अखिलेश यादव सहित पूरे सैफई परिवार की प्रतिष्ठा इस चुनाव से जुड़ गई है।

उधर, यादव बाहुल्य इस सीट को जीतने के लिये भाजपा ने भी पूरी ताकत झोंक रखी है। करहल सीट पर जीत हासिल कर बीजेपी लोकसभा चुनाव में सपा से मिली हार का हिसाब बराबर करना चाहती है। इसके साथ ही भाजपा ने सैफई परिवार के रिश्तेदार अनुजेश यादव को प्रत्याशी बनाकर सबको चौंका दिया है। बता दें अनुजेश यादव की मां उर्मिला यादव घिरोर विधानसभा सीट से दो बार विधायक रह चुकी हैं। यह क्षेत्र वर्तमान में करहल विधानसभा सीट के अंदर आता है। अनुजेश यादव की पत्नी संध्या यादव (सपा सांसद धर्मेंद्र यादव की बहन) मैनपुरी की जिला पंचायत अध्यक्ष रह चुकी हैं। यदि बीजेपी अनुजेश की जीत की उम्मीद लगा रही है तो इसे सपा हल्के में नहीं ले रही है, इतना तय है कि मुलायम कुनबे से दो प्रत्याशियों की चुनाव में प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। कुल मिलाकर बीजेपी ने सपा के सामने वह स्थिति खड़ी कर दी है जिसमें सपा को अपनी जीत की खुशी और बीजेपी की हार का गम दोनों मनाना पड़ेगा।

सीएसआरः अब जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र के लिए कर सकते हैं ऑनलाइन आवेदन

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने सीएसआर (सिविल रजिस्ट्रेशन सिस्टम) मोबाइल एप्लिकेशन लॉन्च की। अब इस ऐप की मदद से जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र के लिए ऑनलाइन आवेदन कर उसे प्राप्त किया जा सकेगा।

सीएसआर के अंतर्गत, घर पर जन्म की स्थिति में माता–पिता को एक तय प्रोफॉर्मा में घोषणापत्र देना होगा और साथ ही पते का प्रमाण भी प्रस्तुत करना होगा। इसके लिए वोटर आईडी कार्ड, बिजली का बिल, गैस का बिल, पानी का बिल, फोन का बिल, पासपोर्ट, राशन कार्ड, आधार कार्ड, बैंक खाता जैसे दस्तावेजों में से कोई एक दस्तावेज मान्य होगा।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मंगलवार को सीएसआर (सिविल रजिस्ट्रेशन सिस्टम) मोबाइल एप्लिकेशन लॉन्च की। अब इस ऐप की मदद से जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र के लिए ऑनलाइन आवेदन कर उसे प्राप्त किया जा सकेगा। बताया जा रहा है कि इस सुविधा से प्रमाण पत्र प्राप्त करने का समय भी कम हो जाएगा।

सर्टिफिकेट प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ता को ऑनलाइन पंजीकरण करना होगा। यह कार्य इस लिंक https://csrorgi-gov-in/web/indeÛ-php/auth/signup पर किया जा सकता है। साइन अप के लिए नाम, मोबाइल नंबर, ईमेल आईडी, जन्म या मृत्यु का समय और पते की जानकारी देनी होगी।

घर में जन्म की स्थिति में माता–पिता को तय प्रोफॉर्मा में घोषणापत्र के साथ पते का प्रमाण देना होगा। इसके लिए उपरोक्त दस्तावेजों में से कोई एक स्वीकार्य होगा। यदि जन्म अस्पताल में होता है, तो जानकारी देने की जिम्मेदारी परिवार की नहीं, बल्कि अस्पताल के ड्यूटी इंचार्ज की होगी। जानकारी 21 दिनों के भीतर देनी होगी।

यदि देरी होती है, तो 21–30 दिनों के बीच में डिले फीस के साथ तय प्रोफॉर्मा यानी फॉर्म 1 भरना होगा। 30 दिनों से 1 साल के भीतर होने वाली देरी पर फॉर्म 1, नॉन–अवेलिबिलिटी सर्टिफिकेट (फॉर्म 10), डिले फीस, हलफनामा और संबंधित

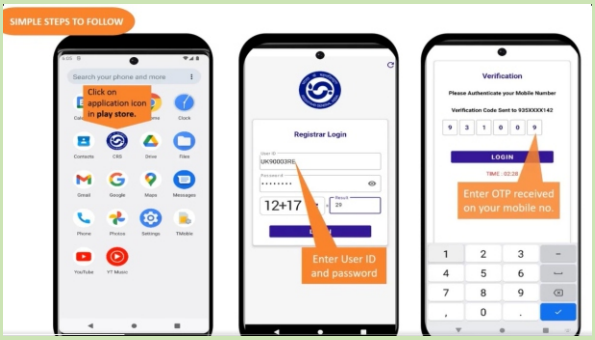

अधिकारी की अनुमति देनी होगी। एक साल से अधिक की देरी होने पर फॉर्म 1, फॉर्म 10, डिले फीस, हलफनामा और फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट का आदेश आवश्यक होगा।

घर में हुई मृत्यु की जानकारी 21 दिनों के भीतर देनी होगी, जिसमें परिवार को घोषणापत्र और फॉर्म 2 के माध्यम से मृतक का पते का प्रमाण देना होगा। अस्पताल में मृत्यु की स्थिति में इसकी जिम्मेदारी ड्यूटी इंचार्ज की होगी।

मृत्यु की जानकारी भी 21 दिनों के भीतर देनी होगी, और समय सीमा पार होने पर संबंधित रजिस्ट्रार से संपर्क करना आवश्यक होगा। 21–30 दिनों के भीतर देरी पर डिले फीस और फॉर्म 2 देना होगा। 30 दिनों से 1 साल के भीतर देरी पर फॉर्म 2, नॉन–अवेलिबिलिटी सर्टिफिकेट (फॉर्म 10), डिले फीस, हलफनामा और संबंधित अधिकारी की अनुमति देनी होगी। एक साल से अधिक की देरी पर फॉर्म 2, फॉर्म 10, डिले फीस, हलफनामा और फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट का आदेश अनिवार्य होगा।

सांगानेर की खुली जेल में काम करने, परिवार के साथ रहने का मौका, कोई कैदी वाली वर्दी भी नहीं

कल्पना कीजिए एक ऐसी जेल जहां कैदियों को तनख्वाह के लिए बाहर काम करने का अवसर मिले, अपने परिवार के साथ रहने का मौका हो, और कैदी वर्दी पहनने की बाध्यता न हो, बस शाम तक वापस लौटकर उपस्थिति दर्ज करनी हो। यही है सांगानेर की खुली जेल, जहां कई कैदियों का जीवन बदला है।

सांगानेर खुली की मुख्य बातें

- सांगानेर खुली जेल ने कई कैदियों को एक नई जिंदगी दी।
- सुप्रीम कोर्ट ने खुली जेल की जमीन लेने की कोशिश पर कड़ी नाराजगी जताई।
- सांगानेर मॉडल से प्रेरित होकर खुली जेलों की संख्या में वृद्धि हुई।

कुछ ही दिन पहले, सुप्रीम कोर्ट ने सांगानेर की खुली जेल की जमीन लेने के प्रयास पर राजस्थान सरकार को फटकार लगाई थी। सांगानेर जेल को एक आदर्श जेल के रूप में देखा जाता है। यह एक ऐसी खुली जेल है जहां कैदियों को पारंपरिक जेल की चार दीवारों से बाहर निकलकर नया जीवन शुरू करने का मौका मिलता है। यहां वे काम कर सकते हैं, अपनी कमाई से गुजारा कर सकते हैं और अपने परिवार के साथ रह सकते हैं। यह मॉडल कैदियों को सुधारने और उन्हें समाज में फिर से शामिल करने में मदद करता है।

सांगानेर में मिला नया जीवन

कई ऐसे कैदी हैं जिन्होंने सांगानेर में नई जिंदगी पाई। दस साल तक पारंपरिक जेल में रहने के बाद उन्हें लगा कि उनकी जिंदगी खत्म हो चुकी है। लेकिन सांगानेर जेल ने उन्हें एक नई शुरुआत का मौका दिया। वहां उन्होंने काम किया, परिवार के साथ समय बिताया, और फिर से जीना शुरू किया। सांगानेर जेल में न तो लोहे की सलाखें हैं, न ताले, और यहां की व्यवस्था विश्वास पर आधारित है। उनका कहना है कि वे अपने परिवार के साथ रह सकते थे, दिन में बाहर जा सकते थे और अपनी मजदूरी का इस्तेमाल अपने लिए कर सकते थे। उनके अनुसार, यह बहुत बड़ा बदलाव था। अब वे चार महीने से जेल से बाहर हैं, लेकिन उनका मानना है कि खुली जेल में बिताए गए चार सालों ने उन्हें वास्तविक दुनिया में ढलने में मदद की। परिवार का समर्थन और जयपुर में अपने व्यवसाय के कारण उनके जीवन में बड़ा बदलाव आया।

सांगानेर की खुली जेल यह दिखाती है कि जेलें केवल सजा देने के लिए नहीं, बल्कि कैदियों के सुधार और उन्हें समाज में फिर से शामिल करने के लिए होनी चाहिए। यह मॉडल अन्य जगहों पर भी लागू किया जाना चाहिए। सांगानेर जेल जयपुर से लगभग 25 किलोमीटर दूर है और इसमें लगभग 450 कैदी रहते हैं।

सांगानेर जेल के मामले में सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेप

सांगानेर मॉडल कई राज्यों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। हालांकि, हाल ही में इसे खतरा पैदा हो गया जब जयपुर विकास प्राधिकरण ने जेल की जमीन का एक हिस्सा अस्पताल को देने का प्रस्ताव रखा। इस फैसले का कई विशेषज्ञों और कार्यकर्ताओं ने विरोध किया है। उनका मानना है कि सांगानेर मॉडल कैदियों के सुधार के लिए बेहद महत्वपूर्ण है और इसे बचाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में हस्तक्षेप कर भूमि आवंटन पर रोक लगा दी है। इस प्रकार की भूमि का उपयोग प्रतिबंधित करना गलत संदेश देता है, क्योंकि सांगानेर को लंबे समय से एक आदर्श मॉडल माना जाता है।

सुविधाओं का बाहरी लोगों द्वारा भी उपयोग

सांगानेर की खुली जेल यह दिखाती है कि जेलें केवल सजा देने के लिए नहीं, बल्कि कैदियों के सुधार और उन्हें समाज में फिर से शामिल करने के लिए होनी चाहिए। यह मॉडल अन्य जगहों पर भी लागू किया जाना चाहिए। सांगानेर जेल जयपुर से लगभग 25 किलोमीटर दूर है और इसमें लगभग 450 कैदी रहते हैं। इसे 1963 में विकसित किया गया था, और तब से कैदियों ने यहां आवास, स्कूल, खेल का मैदान और आंगनवाड़ी केंद्र का निर्माण किया है। इन सुविधाओं का उपयोग कैदियों के परिवारों के साथ–साथ आस–पास के लोग भी करते हैं। खेल का मैदान सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों के लिए उपयोग होता है, और स्कूल व आंगनवाड़ी में आस–पास के क्षेत्र के बच्चे पढ़ाई करते हैं। जेल के नजदीक औद्योगिक क्षेत्र होने से कैदियों को काम मिल जाता है, और महिलाएं घरेलू कामगार के रूप में काम करती हैं।

सांगानेर की सफलता

सांगानेर मॉडल की सफलता खुली जेलों की बढ़ती संख्या में दिखाई देती है।

2018 में सुप्रीम कोर्ट ने जेलों में भीड़भाड़ की समस्या से निपटने के लिए हर जिले में खुली जेलें शुरू करने का निर्देश दिया था। उस समय 60 खुली जेलें थीं, जो अब बढ़कर 152 हो गई हैं। राजस्थान में ही यह संख्या 22 से बढ़कर 52 हो गई है। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश मदन लोकुर, जिन्होंने सांगानेर जेल का दौरा किया था, बताते हैं कि यहां भागने की कोई घटना नहीं हुई। यह दिखाता है कि सांगानेर मॉडल कारगर है।

महाराष्ट्र में 'लाडली बहना' योजना बंद

महाराष्ट्र कांग्रेस प्रभारी रमेश चेन्निथला ने कहा, हमारा लक्ष्य महाराष्ट्र में एमवीए सरकार बनाना है और हम इस लक्ष्य के साथ काम कर रहे हैं चुनाव आयोग द्वारा इस योजना को रोक दिया गया है क्योंकि राज्य सरकार के पास पैसा नहीं है।

मध्य प्रदेश की लाड़ली बहना योजना की तरह ही महाराष्ट्र में भी 1 जुलाई से मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना शुरू की गई है, जिसे महाराष्ट्र में बहुत अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। राज्य में 2.5 करोड़ से अधिक लाभार्थी महिलाओं के बैंक खातों में अब तक 4 से 5 किश्तें जमा की जा चुकी हैं। दिवाली बोनस के तहत हर लाभार्थी महिला के खाते में 3000 रुपये एक साथ भेजे गए हैं, जो अक्टूबर की चौथी और नवंबर की पांचवीं किश्त का एडवांस भुगतान है। इसके अलावा, कुछ अन्य श्रेणियों की पात्र महिलाओं को 2500 रुपये और दिए गए हैं। इसी बीच, लाड़की बहना योजना पर एक बड़ा दावा किया गया है।

मुंबई में पत्रकारों से बात करते हुए महाराष्ट्र कांग्रेस प्रभारी रमेश चेन्निथला ने कहा, "हमारा लक्ष्य महाराष्ट्र में एमवीए सरकार बनाना है और हम इस लक्ष्य के साथ काम कर रहे हैं चुनाव आयोग (ईसीआई) द्वारा महाराष्ट्र सरकार की लाड़ली बहना योजना को रोक दिया गया है क्योंकि राज्य सरकार के पास पैसा नहीं है। महाराष्ट्र की महिलाओं को सरकार से कोई पैसा नहीं मिलेगा, यह सब चुनाव से पहले किए गए झूठे वादे थे" हालांकि, महाराष्ट्र सरकार ने स्पष्ट किया है कि लाड़की बहना योजना बंद नहीं होगी। कई महिलाएं इस योजना का लाभ पाने का इंतजार कर रही हैं।

महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव की घोषणा के बाद आचार संहिता लागू हो गई है, जिससे कई लोगों के मन में यह सवाल उठने लगा कि लाड़ली बहना योजना (लाड़की बहना योजना) का क्या होगा। इस बारे में महिला एवं बाल विकास मंत्री अदिति तटकरे ने हाल ही में जानकारी दी है। तटकरे ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर बताया कि विरोधी इस योजना के बारे में झूठी खबरें फैला रहे हैं। उन्होंने कहा कि 4 से 6 अक्टूबर 2024 के बीच प्रदेश की 2 करोड़ 34 लाख पात्र लाड़ली बहनों को अक्टूबर और नवंबर माह का लाभ दिया गया है। सभी पात्र महिलाओं को दिसंबर का भुगतान दिसंबर में ही किया जाएगा। सभी लाभार्थियों से निवेदन है कि वे किसी भी गलत जानकारी पर ध्यान न दें।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव की घोषणा के बाद सत्तारूढ़ महायुति सरकार ने 16 अक्टूबर को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिसमें शिंदे सरकार ने अपने ढाई साल के कार्यकाल का श्रिपोर्ट कार्डश पेश किया। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने लाड़ली बहना योजना को लेकर बड़ा बयान दिया। विपक्ष ने योजना की आलोचना करते हुए दावा किया कि चुनाव के बाद इसे बंद कर दिया जाएगा। इस पर अजित पवार ने कहा कि भविष्य में लाड़की बहना योजना की राशि बढ़ाई जाएगी। फिलहाल इस योजना के तहत सरकार हर लाभार्थी महिला के खाते में 1500 रुपये प्रति माह जमा कर रही है, और एक साल के लिए कुल 45 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

अजित पवार ने कहा कि चुनाव आएंगे और जाएंगे लेकिन यह पैसा महिलाओं का अधिकार है। हम भविष्य में इस योजना की राशि बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं और यह योजना जारी रहेगी। विपक्षी दलों का दावा है कि यह योजना लंबे समय तक नहीं चल पाएगी, क्योंकि इससे राज्य की आर्थिक स्थिति प्रभावित हो रही है। विपक्ष का आरोप है कि सरकार ने चुनाव में हार के डर से यह योजना शुरू की ताकि महिलाओं के वोट हासिल किए जा सकें और चुनाव के बाद इसे बंद कर दिया जाएगा। लेकिन मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने इन दावों का खंडन किया है।

लंका मीनार

बुंदेलखंड के प्रवेश द्वार कालपी में स्थित इस मीनार में नहीं जाते हैं भाई-बहन एक साथ

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के जालौन जिले में एक ऐसा पर्यटन स्थल है जहां भाई–बहनों का एक साथ जाना प्रतिबंधित है। मान्यता है कि यदि भाई–बहन यहां एक साथ जाते हैं, तो वे पति–पत्नी बन जाते हैं। आइए इसके पीछे की कहानी को विस्तार से जानते हैं।

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के जालौन जिले में एक ऐसा पर्यटन स्थल है जहां भाई–बहनों का एक साथ जाना प्रतिबंधित है। मान्यता है कि यदि भाई–बहन यहां एक साथ जाते हैं, तो वे पति–पत्नी बन जाते हैं। आइए इसके पीछे की कहानी को विस्तार से जानते हैं।

बुंदेलखंड क्षेत्र के जालौन जिले में स्थित 210 फीट ऊंची इमारत, जिसे लंका मीनार कहा जाता है, लंका के राजा रावण और उसके पूरे परिवार की प्रतिमाओं का घर है। इस मीनार में भगवान शिव का मंदिर है और अन्य देवी–देवताओं, जैसे चित्रगुप्त, की ऊंची–ऊंची प्रतिमाएं भी हैं। दिल्ली के कुतुब मीनार के बाद ऊंचाई के मामले में यह इमारत देश में दूसरे स्थान पर आती है। इस अनोखी मान्यता के कारण यह मीनार बुंदेलखंड का प्रमुख पर्यटन स्थल बन गई है, और यहां रोजाना सैकड़ों देशी और विदेशी पर्यटक आते हैं।

मान्यता है कि लंका मीनार में भाई–बहन एक साथ ऊपर नहीं जा सकते, क्योंकि मीनार की सात परिक्रमा करनी होती है। यदि भाई–बहन इस परिक्रमा को एक साथ करते हैं, तो वे पति–पत्नी बन जाएंगे। इसे सनातन धर्म की शादी की रस्मों से जोड़कर देखा जाता है, क्योंकि शादी में भी पति–पत्नी सात फेरे लेते हैं। इस मान्यता का पालन स्थानीय लोग और आसपास के जिलों के निवासी पिछले 132 वर्षों से कर रहे हैं।

इस मीनार का निर्माण कालपी के निवासी वकील बाबू मथुरा प्रसाद निगम ने करवाया था और इसे प्रसिद्ध शिल्पकार रहीम वक्श की देखरेख में बनाया गया था। मथुरा प्रसाद रावण से अत्यधिक प्रभावित थे और रामलीला में रावण की भूमिका निभाते थे, इसलिए उन्होंने लंका मीनार का निर्माण कराया। इस मीनार के अंदर रावण के परिवार के चित्र और विशाल प्रतिमाएं हैं। कुंभकरण की 100 फीट ऊंची प्रतिमा और मेघनाद की 65 फीट ऊंची प्रतिमा के साथ यहां भगवान शिव, चित्रगुप्त और नाग देवता की भी प्रतिमाएं हैं। इस मीनार की ऊंचाई 210 फीट है, और इसे बनवाने में लगभग दो लाख रुपये का खर्च आया था।

अगले साल हो सकती है भारत में जनगणना, जातिगत गणना पर अभी भी संशय

देश में जनगणना 2025 की शुरुआत में शुरू हो सकती है, और इसके आंकड़े 2026 में जारी किए जाएंगे, जिससे जनगणना का चक्र भविष्य में पूरी तरह बदल जाएगा। हालांकि, जाति आधारित जनगणना पर अब तक कोई निर्णय नहीं हुआ है, यह जानकारी आधिकारिक सूत्रों से मिली है।

1951 से हर दस साल में जनगणना होती रही है, लेकिन 2021 में कोविड महामारी के कारण इसे स्थगित कर दिया गया था। राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) को अपडेट करने का काम भी अभी बाकी है। अभी तक नई तारीख की आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। सूत्रों के अनुसार, जनगणना और एनपीआर का काम अगले साल की शुरुआत में शुरू हो सकता है और जनगणना के आंकड़े 2026 में जारी किए जाएंगे। इसके बाद जनगणना का चक्र 2025–2035 और फिर 2035–2045 के रूप में बदल सकता है।

जनगणना के आंकड़े सरकार के लिए नीति निर्माण, संसाधनों के समान वितरण और सामाजिक योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। इससे न केवल जनसंख्या बल्कि जनसांख्यिकीय और आर्थिक स्थिति जैसे कई महत्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी मिलती है। इस बार के आंकड़े खासतौर पर लोकसभा सीटों के परिसीमन और महिला आरक्षण के लिए भी अहम हैं।

रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त कार्यालय ने जनगणना के दौरान पूछे जाने वाले 31 प्रश्न तैयार किए हैं। इनमें श्परिवार का मुखिया अनुसूचित जाति या जनजाति से है या नहींश जैसे सवाल शामिल हैं। विपक्षी दल कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) जाति आधारित जनगणना की मांग कर रहे हैं ताकि ओबीसी की कुल संख्या का पता चल सके। सरकार ने इस पर अब तक कोई निर्णय नहीं लिया है।

सरकारी सूत्रों के अनुसार, जाति जनगणना विपक्ष के लिए मुद्दा हो सकता है, और कुछ सहयोगी दल इसके समर्थक हैं, लेकिन इस पर सरकार पर कोई बड़ा दबाव नहीं है। संघ ने आंकड़े सार्वजनिक न करने की शर्त पर सहमति दी है। इसके साथ ही सरकार की प्रमुख सहयोगी टीडीपी ने कौशल गणना का विचार दिया है, जो रोजगार पर केंद्रित है।

सरकार चाहती है कि जनगणना व्यापक, भविष्योन्मुखी और समावेशी हो। यदि जाति जनगणना को लेकर सहमति बनती है, तो इसमें सभी धर्मों और जातियों को शामिल किया जाएगा। हालांकि, अभी यह भी तय नहीं है कि क्या 2026 के आंकड़ों के आधार पर परिसीमन का काम आगे बढ़ाया जाएगा। दक्षिण के कई नेता इस बात को लेकर चिंतित हैं कि इससे उनकी लोकसभा सीटों की संख्या प्रभावित हो सकती है क्योंकि उन्होंने जनसंख्या नियंत्रण में सफलता पाई है। संविधान के अनुच्छेद 82 के अनुसार, लोकसभा में राज्यों का प्रतिनिधित्व पुनर्गठन 2026 के बाद की पहली जनगणना और उसके परिणामों के प्रकाशन पर निर्भर करेगा। अगर जनगणना 2025 में होती है और नतीजे 2026 में आते हैं तो इसके लिए अनुच्छेद 82 में संशोधन करना होगा। वर्तमान में लोकसभा में राज्यों का प्रतिनिधित्व 1971 की जनगणना पर आधारित है।

जनगणना 2026 में पूरी होने और इसके आंकड़े प्रकाशित होने के तुरंत बाद परिसीमन प्रक्रिया शुरू करने की योजना है, जिसे 2028 तक पूरा करना चाहती है ताकि अगली लोकसभा में महिला आरक्षण लागू किया जा सके। जनगणना प्रक्रिया में परिवार के सदस्यों की संख्या, मुखिया का लिंग, घर के कमरे, टेलीफोन, इंटरनेट और वाहन संबंधी सवाल शामिल हैं। भारत में पहली जनगणना 1872 में हुई थी और आजादी के बाद पहली बार 1951 में, जबकि आखिरी बार 2011 में जनगणना की गई थी। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 121 करोड़ और लिंगानुपात 940 महिलाएं प्रति 1000 पुरुष था, साक्षरता दर 74.04ः थी।

जनगणना को लेकर खबरें सामने आने के बाद कांग्रेस ने इस पर सर्वदलीय बैठक बुलाने की मांग की है। विपक्ष चाहता है कि सरकार जाति जनगणना पर स्पष्टता दे और यह भी बताये कि इस जनगणना का उपयोग लोकसभा में राज्यों के प्रतिनिधित्व के लिए किया जाएगा या नहीं। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पर कहा कि इन दोनों मुद्दों पर स्पष्टता नहीं है और जाति जनगणना केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है।

पूछ की पूंछ

मेरा पन्ना

कवयित्री प्रज्ञा श्रीवास्तव प्रज्ञाञ्जलि

बिट्टन चाची की बहू पढ़ी–लिखी है, और अंग्रेजी भी फर्राटेदार बोलती है। खूबसूरती तो इतनी की चांद भी देखकर उसे अपना दिल दे बैठे। अभी बहू को आए एक महीना ही हुआ है। शाम को जब मोहल्ले की बूढ़ी औरतों की महफिल जमती है, तो वे अपने–अपने घर की कथा सरिता को बड़े ही रोचक ढंग से पेश करती है। बिट्टन चाची तो ग्रुप की लीडर है। पूरे मोहल्ले की खबर जब तक न जान लें खाना नहीं पचता उनका। अब उनका नंबर है, पारी खेलने का। रत्ना चाची, बडकी ताई, छुट्टन बुआजी, जो बड़की ताई की लाडली छोटी बेटी है, पंचायत करने में बड़ी निपुण है। जब भी आती है, कोई न कोई मुद्दा गर्माता रहता है। सरोज दादी बड़ी शांत है, सब उन्हें संतो दादी कहते हैं। वैसे बतादूं मेरी दादी जिन्हें सब जिज्ली कहते हैं, सुपर वूमेन से कम नहीं है। कोई भी समस्या हो, सब का हल निकाल लेती है। आज जब महफिल सजी तो रत्ना चाची ने कुटिल मुस्कान में बिट्टन चाची से पूछ ही लिया, कि बहूरानी के क्या हाल हैं? कैसी कट रही है? बिट्टन चाची ने हाथ में लिए डब्बे को आगे बढ़ाते हुए कहा, लड्डू खाओ बहू ने बनाएं हैं। बड़की ताई और छुट्टन बुआ जी ने दो–दो लड्डू उठा लिए और खाने के बाद मुंह बिचकाते हुए बोली, मीठा थोड़ा ज्यादा है... संतो दादी ने बात संभालते हुए कहा लड्डू जब तक मीठे न हो मजा नहीं आता। सब हंस पड़े। तभी बिट्टन चाची की बहू भी वहां आ गई और सब को प्रमाण करते हुए बोली, मम्मी जी वह ठग्गू हलवाई के लड्डू वाला डिब्बा नहीं दिख रहा– पापा जी मांग रहे हैं। बिट्टन चाची को तो जैसे सांप सूंघ गया। सभी बहू की तरफ देख कर हंस पड़े। सभा वहीं बर्खास्त कर दी गई। सब अपने–अपने घर लौट गए। पर आते ही बिट्टन चाची ने फरमान जारी कर दिया कि आज के बाद उनसे पूछे बगैर बहू घर के बाहर कदम नहीं रखेगी। बहू भी कम चतुर नहीं थी, जी मम्की जी कहकर बोली मम्मी जी घर के अंदर तो आपकी आज्ञा के बगैर आ जा सकती है...??? लेकिन बिट्टन चाची गुस्से में थी सो बोल पड़ी, नहीं मुझसे पूछे बगैर कोई काम नहीं करेगी। अब क्या कोई भी काम हो उनसे पूछे बगैर नहीं करती बिट्टन चाची की बहू। सुबह उठते ही अपने कमरे से जोर से आवाज लगाती है, मम्मी जी कमरे से बाहर आ जाउं...?? दो दिन तो बिट्टन चाची को बड़ा गर्व हुआ कि उनकी बहू हर काम उनसे पूछ कर करती है, पर तीसरे दिन जब घर पर पूना वाले मामा जी के साले के साले की साली के नंदोई की बहन के फूफा जी घर पर आए तो घर पर बिट्टन चाची और बहू के अलावा कोई नहीं था, बिट्न चाची के सिर और पैर में दर्द हो रहा था सो बहू उनकी सेवा कर रही थी। जैसे ही घंटी बजी, बिट्टन चाची ने सोचा बहू दरवाजा खोल देगी पर वह दरवाजा खोलने नहीं गई। उन्होंने कहा बहू दरवाजा खोल, कोई आया है। दरवाजे के पास पहूँच कर बहू ने पूछा मम्मी जी दरवाजा खोल दूँ, अंदर से आवाज आई हॉ खोल दे। मम्मी जी मेहमान को अंदर ले लूँ...?? हॉ बुला लें, मम्मी ने मेहमान को बैठने के लिए कह दूँ...?? कह दें, बिट्टन चाची अपने कमरे से बाहर आई फूफाजी ने अपना परिचय दिया और सोफैपर बैठ गए। बहू फिर बोली मम्मी जी पानी ले आउँ...?? हॉ बहू मुसकुराते हुए बिट्टन चाची बोली। मम्मी जी पानी के साथ मिठाई भी ले आउँ...?? ले आओ बहूरानी फूफा जी बोले। बहू ने कहा, मम्मी जी से पूछे बगैर कुछ भी नहीं ला सकती। बिट्टन चाची बोली जा बहू ले आ। बहू पानी और मिठाई ले आई। मम्मी जी चाय बना लाउँ..?? कौन से कप में लाउँ बड़े या छोटे..?? बड़े कम में लाउँ तो कौन से फूल वाले या तितली वाले, या काले मोटे गोल–गोल डिजाइन वाले..?? अब

तो बहू का पूछना बिट्टन चाची को बड़ा बुरा लग रहा था। उनकी स्थिति ऐसी थी जैसे काटो तो खून नहीं। फूफाजी तो दो दिन बाल चले गए। बिट्टन चाची का फेंका हुआ पासा उन पर ही उल्टा पड़ा गया। पूरे मोहल्ले में बिट्टन चाची की आज्ञाकारी बहू की ही चर्चा थी। जब भी महफिल सजती बहू की ही चर्चा होती। बिट्टन चाची का चेहरा ऐसा लगता मानो खिसियानी बिल्ली खंभे नोचे। अब उन्हें बहू की हर छोटी–छोटी बात को पूछ कर करना अच्छा नहीं लगता। साल बहू दोनों खिलाड़ी थे, सो हार कैसे मान लें। एक दिन तो हद हो गई जब बिट्टन चाची चलते–चलते नाली में गिर गई, तो बहू ने साल को नाली में से उठाने से पहले पूछा मम्मी जी आपको नाली में से उठा लूँ...?? बिट्टन चाची अब अपने कहे पर पछता रही थीं, उन्होंने अपनी बहू से कहा अब पूछ की पूंछ पकड़ना छोड़, मैं अपनी बात वापस लेती हूँ। बहू मुस्कुरा रही थी।

आर.एन.आई. नं.- RAJHIN/2019/77486

प्रकाशन की तिथि- प्रत्येक माह की 7 तारीख
प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की 10 तारीख

विभिन्न विषयों पर आधारित हिन्दी मासिक पत्रिका

तीर निशाने पर

विशिखा

पत्रिका पाने के लिए सम्पर्क करें

सदस्यता शुल्क	
सदस्यता शुल्क	मूल्य प्रति कापी मात्र 25/- रुपये
	एक वर्ष के लिये मात्र 275/- रुपये
	दो वर्ष के लिये मात्र 550/- रुपये

Paytm Accepted Here

Paytm 9587455444

BANK DETAILS-
A/C No. - 6345002100000139
IFSC Code- PUNB0634500
A/C Off- VISHIKHA MEDIA
Bank - Punjab National Bank
Branch - NRI Circle, JAIPUR

विशिखा में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें

पृष्ठ श्रेणी	कलर	अमांउट
बैक फुल पेज	फोरकलर	₹ 50,000/-
फ्रंट व बैक इनर फुल पेज	फोरकलर	₹ 30,000/-
अन्य फुल पेज	फोरकलर	₹ 20,000/-

विशिखा तीर निशाने पर...

मुख्यालय : विशिखा मीडिया 191/56, सेक्टर-19, प्रताप नगर, सांगानेर जयपुर-302033 (राज.)
Contact us: +911413562171, 9587455444
E-mail: vishikhamedia@gmail.com | **Website:** www.vishikhamedia.in
vishikhamedia/ _vishikhamedia/ vishikhamedia